ताजा खबरों के लिए पढ़ें-
https://ureshiyanews.page/
www.ureshiya.com

मेरठ से प्रकाशित व गाजियाबाद, बागपत, बुलन्दशहर, सहारनपुर, शामली, बिजनौर, अमरोहा, गजरौला में एक साथ प्रसारित

दैनिक युरेशिया

सम्पादक : संजय त्यागी 'महादेव'
प्रधान सम्पादक : गौहर अनवार

वर्ष: 3 अंक : 236
मेरठ, बुधवार, 26 जून 2024
(पृष्ठ: 6)
मूल्य: 2 रूपया

हमें सम्पर्क करें-
editorureshiya@gmail.com

पूर्व मंत्री शंखलाल मांझी ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव से की मुलाकात...6

राष्ट्रहित सर्वोपरि

ग्यारसपुर की बारह सौ वर्ष प्राचीन प्रतिमा....4

अमेरिका ने हिसार में एकीकृत विमानन केंद्र विकसित करने के लिए वित्तपोषण को दी मंजूरी

वाशिंगटन, । अमेरिकी व्यापार एवं विकास एजेंसी ने हरियाणा के हिसार हवाई अड्डे पर एक एकीकृत विमानन केंद्र बनाने में मदद के लिए तकनीकी सहायता के वास्ते अनुदान निधि को मंजूरी दे दी है।

अमेरिकी व्यापार एवं विकास एजेंसी (यूएसटीडीए) की निदेशक एनोह टी एबोंग ने यहां तीन दिवसीय अमेरिका-भारत विमानन शिखर सम्मेलन में मंगलवार को यह घोषणा की।

एकीकृत विमानन केंद्र बनाने का मकसद भारत की आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क को मजबूत करने के लिए हवाई अड्डे के माल तथा रसद बुनियादी ढांचे को विकसित करना है।

उन्होंने कहा, '' मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि यूएसटीडीए ने हरियाणा राज्य के हिसार हवाई अड्डे पर एक एकीकृत विमानन केंद्र बनाने में मदद के लिए तकनीकी सहायता हेतु अनुदान निधि को मंजूरी दे दी है।'

एबोंग ने हालांकि यूएसटीडीए से मिलने वाली अनुदान राशि का खुलासा नहीं किया। उन्होंने कहा, '' हमारे कदम हवाई अड्डे के माल तथा लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढांचे को विकसित करने में मदद करेंगे, जो भारत की आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क को मजबूत करेगा।'

शीर्ष अधिकारी ने बताया कि भारत में 10 विमानन परियोजनाएं हैं जिनमें अमेरिकी कंपनियां योगदान कर सकती हैं।

उन्होंने कहा, '' हम और भी काम करना चाहते हैं। यह शिखर सम्मेलन हमारी पारस्परिक रूप से लाभकारी विमानन साझेदारी के अगले अध्याय की दिशा तय करने का एक अवसर है।'

जम्मू से वैष्णो देवी मंदिर तक हेलीकॉप्टर सेवा शुरू

कटरा/जम्मू, (एजेंसी)जम्मू से माता वैष्णो देवी मंदिर तक मंगलवार को सीधी हेलीकॉप्टर सेवा शुरू हो गई। इसमें उसी दिन वापसी के लिए प्रति यात्री 35 हजार रुपये और अगले दिन वापसी के लिए प्रति व्यक्ति 60 हजार रुपये लगेंगे। इससे पहले, आधार शिविर और मंदिर के पास सांझी छत के बीच हेलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध है, जिसका एक तरफ का किराया 2,100 रुपये प्रति व्यक्ति है।

अधिकारियों ने बताया कि नयी सेवा की शुरुआत के अवसर पर तीर्थयात्रियों को लेकर पहला हेलीकॉप्टर सुबह करीब 11 बजे जम्मू हवाई अड्डे से रवाना हुआ और मंदिर के नये मार्ग पर पंछी हेलीपैड पर उतरा। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंशुल गर्ग ने कहा कि निजी सेवा प्रायोगिक आधार पर दो उड़ानों के साथ शुरू की गयी है। उन्होंने बताया कि 35 हजार रुपये के पैकेज में पंछी हेलीपैड से भवन तक बैटरी कार सेवा, दर्शन और भैरव मंदिर तक रोपवे टिकट भी शामिल है। दूसरा पैकेज अगले दिन वापसी की सुविधा देता है और इसका शुल्क 60 हजार रुपये प्रति व्यक्ति है। इस सेवा में विशेष प्रार्थना में भाग लेना भी शामिल है। मध्य प्रदेश से परिवार के छह सदस्यों के साथ आए एक तीर्थयात्री ने बताया कि हेलीकॉप्टर ने जम्मू से सुबह करीब 11 बजे उड़ान भरी और दस मिनट में कटरा पहुंच गया।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष होंगे राहुल गांधी

सोनिया गांधी ने प्रोटेम स्पीकर को भेजी चिट्ठी

नयी दिल्ली, (एजेंसी) कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष होंगे। पार्टी संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने लोकसभा के कार्यवाहक अध्यक्ष (प्रोटेम स्पीकर) भर्तृहरि महताब को पत्र भेज कर इस संबंध में कांग्रेस के फैसले के बारे में उन्हें अवगत कराया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आवास पर 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों की नेताओं की बैठक के बाद कांग्रेस ने राहुल गांधी को नेता प्रतिपक्ष बनाने के बारे में घोषणा की। विपक्षी दलों की बैठक में लोकसभा अध्यक्ष पद के चुनाव की रणनीति पर चर्चा की गई। पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने संवाददाताओं को बताया कि सोनिया गांधी ने पार्टी के इस फैसले के बारे में सूचित करते हुए लोकसभा के प्रोटेम स्पीकर भर्तृहरि महताब को पत्र भेजा है। उन्होंने कहा कि लोकसभा में संसदीय दल के अन्य पदों को लेकर फैसला बाद में होगा।राहुल गांधी को यह जिम्मेदारी मिलने पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, '18वीं लोकसभा में लोकसभा सही मायनों में अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करेगी। राहुल गांधी उनकी आवाज बन रहे हैं।' उनका कहना था, 'कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में मुझे विश्वास है कि एक नेता जिन्होंने कन्याकुमारी से कश्मीर तक और मणिपुर से महाराष्ट्र तक पूरे देश का दौरा किया है, वह लोगों विशेषकर हाशिए पर रहने वाले और गरीबों की आवाज उठाएंगे। कांग्रेस पार्टी न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के अपने शाश्वत सिद्धांतों को कायम रखते हुए लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है।' राहुल गांधी इस बार उत्तर प्रदेश के रायबरेली लोकसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए हैं।

इससे पहले वह लोकसभा में केरल के वायनाड और उत्तर प्रदेश के अमेठी का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वह पांचवीं बार लोकसभा पहुंचे हैं।संविधान की प्रति पकड़कर ली शपथ अठारहवीं लोकसभा के पहले सत्र के दूसरे दिन मंगलवार को ओम बिरला, राहुल गांधी, अखिलेश यादव, चरणजीत सिंह चन्नी, हरसिमरत बादल, सुप्रिया सुले, सुदीप बंदोपाध्याय, अभिषेक बनर्जी, असदुद्दीन ओवैसी और संबित पात्रा समेत अनेक नवनिर्वाचित सदस्यों ने निचले सदन की सदस्यता की शपथ ली। कांग्रेस सदस्य राहुल गांधी ने अंग्रेजी में शपथ ली, इस दौरान संविधान की प्रति उनके हाथ में थी। उन्होंने पोडियम से 'जय हिंद, जय संविधान' का नारा लगाया। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी शपथ के वक्त अपने हाथ में संविधान की प्रति ले रखी थी। धारावाहिक रामायण में भगवान राम के किरदार से मशहूर हुए मेरठ के नवनिर्वाचित भाजपा सांसद अरुण गोविल और मथुरा से पुनरू सांसद निर्वाचित हुईं हेमा मालिनी ने भी शपथ ग्रहण की। पंजाब के सांसदों को जब शपथ दिलाई जा रही थी, उस दौरान लोकसभा महासचिव ने खडूर साहिब सीट से निर्वाचित व जेल में बंद अमृतपाल सिंह का नाम भी शपथ लेने के लिए पुकारा।

पीएम मोदी और पुतिन 'विजन पेपर' करेंगे साइन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 8 जुलाई को एक दिवसीय मॉस्को यात्रा के दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ एक 'विजन डॉक्यूमेंट' पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, जो आने वाले दशकों में भारत और रूस के लिए एक रोडमैप पेश करेगा।दक्षिण एशिया के लिए रूसी पॉइंटपर्सन जमीर काबुलोव ने मॉस्को में रूसी विदेश मंत्रालय में अपने कार्यालय में दैनिक ट्रिब्यून के साथ एक विशेष साक्षात्कार में कहा, 'रूस (आपके) प्रधानमंत्री का स्वागत करने के लिए उत्सुक है। हमारा मानना ??है कि यह दोनों नेताओं के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण बैठक होगी।'

मॉस्को में रूस के प्रतिष्ठित 'प्राइमाकोव इंस्टीट्यूट ऑफ ग्लोबल इकोनॉमी एंड इंटरनेशनल रिलेशंस' के अध्यक्ष एलेग्जेंडर डिनकिन ने 'प्राइमाकोव रीडिंग्स' शिखर सम्मेलन से इतर कहा, 'यह महत्वपूर्ण है कि भारत के प्रधानमंत्री तीसरी बार कार्यभार संभालने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए रूस को चुन रहे हैं।'निश्चित रूप से, मोदी की मॉस्को यात्रा पर अमेरिका की गहरी नजर होगी, जिसके राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन एक पखवाड़े से भी कम समय पहले बातचीत के लिए दिल्ली में थे, ताकि यह संकेत मिल सके कि भारत का झुकाव रूस की ओर कितना है। लेकिन अमेरिकी भी जमीनी हकीकत को समझते हैं, जो यह है कि यूक्रेन पर रूसी हमले और उसके बाद पश्चिम द्वारा रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों ने भारत को स्थिति का फायदा उठाने में सक्षम बनाया है।पिछले दो वर्षों में भारतने रूस से बड़ी मात्रा में तेल खरीदा है। इतना कि रूस ने भारत को सबसे ज्यादा तेल बेचने वाले सऊदी अरब की जगह ले ली है। भारत ने सस्ते रूसी तेल को घरेलू रिफाइनरियों में परिष्कृत कर यूरोप भेजकर मुनाफा भी कमाया है।

अपने विस्तृत साक्षात्कार के दौरान, काबुलोव, जो अफगानिस्तान में रूस के राजदूत भी हैं, ने इस बारे में भी बात की कि रूस आंतरिक रूप से काबुल में तालिबान से 'आतंकवादी टैग' हटाने पर डिबेट क्यों कर रहा है। उन्होंने कहा कि काबुल में रूसी दूतावास पूरी तरह से खुला है ('यह कभी बंद नहीं हुआ'), एक रूसी राजदूत ने वहां अपना कब्जा जारी रखा है और उन्होंने (काबुलोव) पिछले महीने नई दिल्ली की अपनी यात्रा के दौरान भारतीय अधिकारियों के साथ इस मामले पर बातचीत की थी। काबुलोव ने कहा, 'हमें अफगानिस्तान में जमीनी हकीकत को समझने-पहचानने की जरूरत है, यानी कि तालिबान सत्ता में हैं।'यह पूछे जाने पर कि क्या रूस ग्रुप को मान्यता देगा और मानवाधिकारों पर तालिबान के खराब रिकॉर्ड और अपनी ही महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार के बावजूद विश्व समुदाय में इसके एकीकरण पर जोर देगा जिसमें संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक सीट शामिल होगी। काबुलोव ने कहा, 'हां, हम ऐसा सोचते हैं। हम तालिबान को यह बताने का दावा नहीं कर सकते कि उन्हें अपना देश कैसे चलाना है।'मोदी की यात्रा पर काबुलोव ने कहा कि 'विजन डॉक्यूमेंट' सिर्फ हथियारों या सस्ते रूसी तेल की निरंतर खरीद के बारे में नहीं है, बल्कि इससे भी ज्यादा कुछ है। उन्होंने कहा, 'यह इस बारे में है कि दोनों देश औद्योगिक और वैज्ञानिक मोर्चे पर एक-दूसरे की मदद कैसे कर सकते हैं।" श्री पुतिन दोनों देशों के लिए आपके प्रधानमंत्री के साथ सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करेंगे3भूराजनीति, क्षेत्रीय, द्विपक्षीय, आर्थिक संबंध और जो कुछ भी वे चर्चा करने का निर्णय लेते हैं। काबुलोव ने कहा, हमारे बहुत करीबी रिश्ते हैं और वे एक-दूसरे से बात करने में काफी खुले हैं। लेकिन उन्होंने यह कहने में संकोच नहीं किया कि जहां रूस अमेरिका के साथ भारत की बढ़ती निकटता को समझता है, वहीं उन्होंने कहा कि रूस को यह भी उम्मीद है कि 'यह रूस के साथ संबंधों की कीमत पर नहीं किया जाएगा।'

लोकसभा स्पीकर पर सहमति नहीं, चुनाव आज

बिरला के सामने कांग्रेस के सुरेश

नयी दिल्ली, (एजेंसी) लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए सरकार और विपक्ष के बीच आम-सहमति नहीं बन सकी। अब भाजपा सांसद ओम बिरला का मुकाबला कांग्रेस के कोडिकुन्नील सुरेश के साथ होगा। बिरला और सुरेश ने मंगलवार को क्रमशरू राजग और विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के उम्मीदवारों के रूप में अपने नामांकन पत्र दाखिल किए। लोकसभा में 48 साल बाद स्पीकर पद के लिए चुनाव होने जा रहा है। कांग्रेस ने अपने सांसदों को व्हिप जारी कर कहा है कि लोकसभा अध्यक्ष पद के चुनाव के दौरान बुधवार सुबह 11 बजे से सदन में उपस्थित रहें।

इससे पहले विपक्षी नेताओं ने कहा था कि 'इंडिया' को उपाध्यक्ष पद दिया जाता है तो वह बिरला को समर्थन देने को तैयार हैं। विपक्ष की ओर से कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल और द्रमुक के टीआर बालू ने केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ इस मुद्दे पर बातचीत की, लेकिन दोनों पक्ष अपने रुख पर अड़े रहे। बैठक के बाद वेणुगोपाल ने आरोप लगाया कि सरकार ने उपाध्यक्ष पद विपक्ष को देने की प्रतिबद्धता नहीं जताई। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने विपक्ष की आलोचना करते हुए कहा कि लोकतंत्र शर्तों पर नहीं चलाया जा सकता। इससे पहले, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि लोकसभा उपाध्यक्ष का पद विपक्ष को दिए जाने की परंपरा रही है और यदि सरकार इसका पालन करती है तो पूरा विपक्ष स्पीकर के चुनाव में सरकार का समर्थन करेगा।

इतिहास में तीन बार ही हुआ मतदान लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन बुधवार को होना है। यदि मतदान होता है तो 1976 के बाद यह पहला मौका होगा। स्वतंत्र भारत में लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए केवल तीन बार 1952, 1967 और 1976 में चुनाव हुए। मत विभाजन होता है तो कागज की पर्चियों का इस्तेमाल किया जाएगा, क्योंकि नयी लोकसभा में अब तक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग प्रणाली चालू नहीं हुई है और सदस्यों को सीटों के आवंटन की प्रक्रिया भी चल रही है। सदन में भाजपा समेत राजग के 293 सांसद हैं और विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के 233 सदस्य हैं। राहुल गांधी के वायनाड से इस्तीफे के बाद सदन में कुल सदस्यों की संख्या 542 है। कम से कम तीन निर्दलीय सदस्य भी विपक्षी खेमे में माने जा रहे हैं।

राम मंदिर भवन निर्माण समिति ने गर्भगृह में पानी भरने के आरोप नकारे

अयोध्या, (एजेंसी) उत्तर प्रदेश के अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने मंदिर के गर्भगृह में बारिश का पानी भरने के आरोपों को सिरे से नकारते हुए कहा कि मंदिर निर्माण कार्य की गुणवत्ता में कोई भी कमी नहीं है।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट राम मंदिर का निर्माण करा रहा है। राम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने आरोप लगाया था कि शनिवार आधी रात को हुई बारिश के कारण गर्भगृह में मंदिर की छत से तेजी से पानी टपक रहा था और रविवार सुबह फर्श पर पानी भरा हुआ था। दास ने कहा कि काफी मशक्कत के बाद मंदिर परिसर से पानी निकाला गया हालांकि नृपेंद्र मिश्रा ने इन आरोपों को सिरे से नकार दिया।

मिश्रा ने यहां संवाददाताओं से कहा, 'पहले मैं आपको एक बात स्पष्ट करना चाहूंगा। समाचार पत्रों में यह बात छपी है कि मंदिर की छत से बारिश का पानी टपका। ऐसा कुछ भी नहीं है। मैंने स्वयं निरीक्षण किया।'

26 जून को मिली UN के घोषणापत्र को मंजूरी, पढ़ें और क्या-क्या हुआ था आज के दिन

नयी दिल्ली, संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में 26 जून के दिन का एक खास महत्व है। संयुक्त राष्ट्र (न्दपजमक छंजपवदे) का वैश्विक महत्व, युद्ध को टालने में उसकी भूमिका, कमजोर देशों को दी जाने वाली सहायता और शांति स्थापना में उसके योगदान से सभी वाकिफहैं।

यह अन्तरराष्ट्रीय संगठन औपचारिक रूप से 24 अक्टूबर 1945 को वजूद में आया, लेकिन इसके घोषणापत्र को उसी वर्ष 26 जून को स्वीकार किया गया और इसपर 50 देशों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए।

आने वाली पीढ़ियों को युद्ध की आग से बचाना और हर परिस्थिति में मानव अधिकारों की रक्षा करना इस संगठन के प्रारंभिक दायित्वों में शामिल था, लेकिन वक्त गुजरने के साथ साथ संगठन के कार्य और दायित्वों का विस्तार होता चला गया।

आज दुनिया के लगभग सभी देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले इस संगठन का मुख्यालय न्यूयार्क में है। देश और दुनिया के इतिहास में 26 जून की तारीख पर दर्ज कुछ अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा इस प्रकार

: 1498: चीन में पहला टूथ ब्रश बनाया गया। आधुनिक टूथ ब्रश के पहले मॉडल को चीन के राजा ने पेटेंट कराया था। 1714रू स्पेन और नीदरलैंड ने व्यापार एवं शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए।

1945: सैन फ्रांसिस्को में 50 देशों ने संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए।

1949: बेल्जियम के संसदीय चुनाव में पहली बार महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला।

1976: कनाडा के टोरंटो में स्थित सीएन टॉवर को जनता के लिए खोला गया। 1,815 फुट की यह इमारत उस समय दुनिया की सबसे ऊंची इमारत थी, जिसे 2007 में दुबई की इमारत बुर्ज खलीफा ने दूसरे स्थान पर धकेल दिया।

1982: एयर इंडिया का पहला बोईंग विमान 'गौरीशंकर' बम्बई में दुर्घटनाग्रस्त।

2000 रू बांग्लादेश को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल की पूर्ण सदस्यता प्रदान की गई। 2004 रू पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जफरूल्लाह खान जमाली ने इस्तीफा दिया।

2004 : मशहूर फिल्?म निर्माता यश जौहर क ?ा निधन।

2022 :भारत में एक दिन में कोविड-19 के 11,739 नए मामले सामने आने से देश में कोरोना वायरस से अब तक संक्रमित हो चुके लोगों की संख्या बढ़कर 4,33,83,973 हुई।

कंगना रणौत की 'इमरजेंसी' सितंबर में होगी रिलीज

नयी दिल्ली, (एजेंसी) अभिनेत्री से सांसद बनीं कंगना रणौत की फिल्म 'इमरजेंसी' छह सितंबर को रिलीज होगी। फिल्म निर्माताओं ने मंगलवार को यह जानकारी दी। रणौत ने सोमवार को 18वीं लोकसभा के पहले सत्र के पहले दिन हिमाचल प्रदेश के मंडी से भारतीय जनता पार्टी की सांसद के रूप में शपथ ली थी। रणौत ने 'इमरजेंसी' में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभाई है।

इस फिल्म की रिलीज की तारीख कई बार टल चुकी है। इसे पहले 24 नवंबर, 2023 को रिलीज किया जाना था। 'इमरजेंसी' की मुख्य अभिनेत्री, लेखिका, निर्देशक और निर्माता रणौत ने कहा कि उन्होंने अपनी यह फिल्म बनाने के लिए विलियम शेक्सपियर के नाटक 'द ट्रेजेडी ऑफ मैकबेथ' से प्रेरणा ली।

अभिनेत्री ने कहा, 'मैं विलियम शेक्सपियर के 'मैकबेथ' से बहुत प्रेरित हूं। 'इमरजेंसी' का सार वह विनाश है जो महत्वाकांक्षा द्वारा नैतिक बाधाओं को तोड़ देने के बाद होता है। यह भारतीय लोकतंत्र का निस्संदेह सबसे सनसनीखेज अध्याय है और मैं छह सितंबर 2024 को दुनिया भर में इसकी रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं।' रणौत ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि वह 'स्वतंत्र भारत के सबसे काले अध्याय के 50वें वर्ष की शुरुआत' के अवसर पर अपनी फिल्म 'इमरजेंसी' की रिलीज की घोषणा कर रही हैं। उन्होंने लिखा, 'भारतीय लोकतंत्र के इतिहास के सबसे विवादास्पद प्रकरण की विस्फोटक गाथा।' 'इमरजेंसी' में अनुपम खेर, महिमा चौधरी, मिलिंद सोमन, श्रेयस तलपड़े, विशाक नायर और दिवंगत सतीश कौशिक भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म का निर्माण 'जी स्टूडियोज' और रणौत की 'मणिकर्णिका फिल्म्स' ने किया है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून राजस्थान पहुंचा

नयी दिल्ली/जयपुर/रांची, (एजेंसी) दक्षिण-पश्चिम मॉनसून मंगलवार को राजस्थान पहुंच गया। मौसम विभाग ने बताया कि मॉनसून उत्तरी अरब सागर, गुजरात, मध्य प्रदेश और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के कुछ हिस्सों में आगे बढ़ गया है। मौसम विभाग के मुताबिक, मॉनसून की उत्तरी सीमा मुंद्रा, मेहसाणा, उदयपुर, शिवपुरी, सिद्धि, चाईबासा, हल्दिया, पाकुड़, साहिबगंज और रक्सौल से होकर गुजर रही है। मौसम केंद्र ने बताया कि अगले तीन से चार दिनों में दक्षिण-पश्चिम मानसून के राजस्थान के अधिकतर भागों में आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां अनुकूल हैं। मौसम केंद्र के मुताबिक, अगले 24 घंटों में कोटा और उदयपुर संभाग के कुछ स्थानों पर भारी वर्षा होने की संभावना है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में मंगलवार को न्यूनतम तापमान 28.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया और मौसम विभाग ने हल्की बारिश का अनुमान जताया है। इस बीच, झारखंड में दक्षिण-पश्चिम मानसून की धीमी प्रगति के कारण जून में अब तक 67 प्रतिशत कम बारिश हुई है, जबकि प्रदेश के पांच जिलों में 80 फीसदी से अधिक की कमी दर्ज की गयी है। मौसम विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि मानसून ने निर्धारित समय से 11 दिन बाद 21 जून को राज्य में प्रवेश किया। अधिकारी ने बताया कि एक जून से 25 जून की अवधि में राज्य में 46.6 मिमी बारिश दर्ज की गयी, जबकि सामान्य तौर पर इस अवधि के दौरान 139.9 मिमी वर्षा होती है।

नारी शक्ति की अनुपम मिसाल है तिलवाड़ा की प्रिया उपाध्याय

सोशल वर्कर विपुल जैन ने किया प्रिया उपाध्याय को पौधा भेंट कर सम्मानित

युरेशिया संवाददाता

बागपत। जनपद बागपत के तिलवाड़ा गांव की रहने वाली प्रिया उपाध्याय नारी शक्ति की अनुपम मिसाल है। विलक्षण प्रतिभा की धनी प्रिया उपाध्याय का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ है। उनके पिता आरआरडी उपाध्याय एक जाने-माने पत्रकार और प्रमुख समाजसेवी है।

प्रिया उपाध्याय अपने संस्कारों, देशभक्ति, परोपकार, आदि से अपने परिजनों का नाम रोशन कर रही है और जनपद बागपत को देशभर में गौरवान्वित कर रही है। प्रिया उपाध्याय ने वर्ष 2022 में श्री दिगम्बर जैन इंटर कॉलिज छपरौली से 85 प्रतिशत अंकों के साथ 10 वीं व वर्ष 2024 में 81 प्रतिशत से अधिक अंकों के साथ पीसीएम विषय में 12 की परीक्षा उत्तीर्ण की है। वर्ष 2022 में प्रिया उपाध्याय ने कम्प्यूटर का बेसिक ज्ञान प्राप्त किया था और अब वह कम्प्यूटर में टैली विषय का अध्ययन कर रही है। वह बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की धनी है और देशभक्ति की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी है। वर्तमान में वह एक अच्छी योग गुरू है और शुद्ध मंत्र उच्चारण और गायन में उनकी अच्छी पकड़ है। वह लाठी चलाना जानती है और एक मोटिवेशनल स्पीकर भी है। वह एक कुशल मंच संचालक भी है। वह समय-समय पर लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करती है ओर उनको पर्यावरण की महत्ता से अवगत कराती है। वह लोगों को स्वदेशी अपनाने को जागरूक करती है। वह कभी भी अपना समय व्यर्थ नही जाने देती और अपना समस्त समय स्वाध्याय और दूसरों की भलाई में लगाती है। वर्तमान में 12 वीं परीक्षा देने के उपरान्त छुट्टियों के दिनों में उन्होंने बच्चों को ज्ञान प्रदान करने के लिए एक समर कैंप का आयोजन किया है। कैंप में कक्षा 6 से कक्षा 10 तक के सीबीएसई और यूपी बोर्ड के बच्चों को टयूशन क्लास दे रही है, जिसमें वह कक्षा 9 व कक्षा 10 की छात्राओं को निशुल्क टयूशन प्रदान कर रही है। प्रिया उपाध्याय अपनी समस्त उपलब्धियों का श्रेय अपने गुरूजनों, अपनी माता रेखा रानी, पिता आरआरडी उपाध्याय, छोटे भाई युवराज सूर्या और सहयोगियों को देती है। सोशल वर्कर विपुल जैन ने प्रिया उपाध्याय की उपलब्धियां को देखते हुए उन्हें पौधा भेंट कर सम्मानित किया और अन्य विद्यार्थियों को भी उनके कार्यों से प्रेरणा लेने की बात कही।

मकान विक्रय करने के नाम पर लाखों की रकम हडपने का आरोप

अलीपुर के ग्रामीण ने एसडीएम से लगाई कार्रवाई करने की गुहार

युरेशिया संवाददाता

शामली। कैराना क्षेत्र के गांव अलीपुर निवासी एक ग्रामीण ने गांव के ही कुछ लोगों पर मकान को विक्रय करने के नाम पर लाखों रुपये की रकम हडपने का आरोप लगाते हुए एसडीएम से कार्रवाई की मांग की है।

जानकारी के अनुसार कैराना क्षेत्र के गांव अलीपुर निवासी बाबूराम मंगलवार को अपने परिजनों के साथ कैराना तहसील पहुंचा तथा एसडीएम स्वप्निल कुमार यादव को प्रार्थना पत्र देते हुए बताया कि जनवरी 2024 में गांव के ही कुछ लोगों ने एक आवासीय मकान उसे तथा उसके परिवार के कपिल नामक व्यक्ति को विक्रय करने की बात कही थी। विगत 24 मई को विक्रेताओं ने उक्त मकान का बैनामा उसकी पत्नी ममता व कपिल की पत्नी ऋचु के नाम करके बैंक के माध्यम से चार लाख रुपये की राशि प्राप्त कर ली। आरोप है कि इसके बाद विक्रेता ने उससे छल करते हुए जालसाजी से गांव की ही एक महिला को विक्रय किये गए मकान में बैठा दिया। अब वह महिला अपना हिस्सा होने की बात कहकर उन्हें मकान पर काबिज नही होने दे रही है। उक्त महिला ने अतिरिक्त धन लेकर मकान का मौजूदा विद्युत कनेक्शन भी उसकी पत्नी के नाम करा दिया है। साथ ही, मकान में अपना अधिकार अथवा हक न होने का शपथ-पत्र भी दिया हुआ है। आरोपी विक्रेता मकान पर कब्जा कराने की एवज में उससे अतिरिक्त धन ऐंठना चाहते है। पीड़ित ने एसडीएम से मामले की निष्पक्ष जांच कराकर न्याय दिलाने की गुहार लगाई है।

आपातकाल देश के लिए काला अध्याय: जसवंत सैनी

आपातकाल की 49वीं बरसी पर लोकतंत्र सेनानियों का सम्मान नगर पालिका सभागार में संगोष्ठी व सम्मान समारोह का आयोजन

युरेशिया संवाददाता

शामली। आपातकाल की 49वीं बरसी के मौके पर नगर पालिका में संगोष्ठी व लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर राज्यमंत्री जसवंत सैनी ने कांग्रेस पर संविधान की मर्यादा को तार-तार करते हुए देश को आपातकाल में थोपने का आरोप लगाया।

जानकारी के अनुसार मंगलवार को नगर पालिका सभागार में आपातकाल की 49वीं बरसी के मौके पर संगोष्ठी व लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यमंत्री जसवंत सरूैनी व विशिष्ट अतिथि भाजपा क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मानसिंह रहे। राज्यमंत्री जसवंत सैनी ने कहा कि आपातकाल को भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में एक काले अध्याय के रूप में याद किया जाता है, कांग्रेस ने लगातार 28 साल शासन करने के बाद अपनी डगमगाती सत्ता को बचाने के लिए संविधान की मर्यादा को तार-तार कर 1975 में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल घोषित कर दिया था जिसके बाद लोकतंत्र को बचाने की आवाज उठाने वाले राजनेताओं, मीडिया, स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज को दबाते हुए उन्हें जेलों में ठूंस दिया गया तथा यातनाएं दी गयी।

भाजपा जिलाध्यक्ष तेजेन्द्र निर्वाल ने कहा कि 25 जून 1975 को आपातकाल लगाकर आधी रात से ही पूरे देश को जेल में तब्दील कर दिया गया था। आम जनता के मौलिक अधिकारों को खत्म कर दिया गया था। कुशासन और भ्रष्टाचार देशभर में उपजा आंदोलन इंदिरा गांधी के लिए परेशानी का सबब था, हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी के चुनाव को रद्द कर दिया था जिसे वह स्वीकार नहीं कर पायी। इस मौके पर नगर पालिका चेयरमैन अरविन्द संगल ने लोकतंत्र सेनानियों व उनके प्रतिनिधियों राजेंद्र सिंह विधुर टिटौली, श्रीकृष्ण बंधु नाला, राजबाला पत्नी स्व. धर्मवीर शामली उदयवीर सिंह पेलखा, इश्तियाक झिंझाना, हबीब कैराना आदि को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में राजेन्द्र सिंह, भूपेन्द्र शर्मा, पूर्व जिलाध्यक्ष रामजीलाल कश्यप, पवन तरार, पंकज राणा, पुनीत द्विवदी, रंधावा मलिक, सतीश धीमान, गजेन्द्र सिंह, सतवीर वर्मा, सुधीर पंवार, कुलदीप रोड, भूपेन्द्र सिंह, सलमान अहमद, ऋषिपाल फौजी, पूनम राणा, स्नेहा गर्ग, मंजू आर्य, रोहित विश्वकर्मा, बादल गौतम सहित बडी संख्या में भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार ग्रामीण की मौत

काबडौत पुल के निकट हुआ हादसा, अज्ञात वाहन चालक फरार

युरेशिया संवाददाता

शामली। क्षेत्र के गांव काबडौत पुल पर अज्ञात वाहन द्वारा बाइक में टक्कर मार देने से एक ग्रामीण गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को उपचार के लिए चिकित्सालय लाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। ग्रामीण की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

जानकारी के अनुसार क्षेत्र के गांव बहावडी निवासी चंद्रपाल सिंह पुत्र धारा सिंह मंगलवार को अपनी बाइक पर सवार होकर किसी काम से शामली आ रहा था। जब वह काबडौल पुल के निकट पहुंचा तभी किसी अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी तथा फरार हो गया। वाहन की टक्कर से चंद्रपाल गंभीर रूप से घायल हो गया। आसपास मौजूद ग्रामीणों ने मामले की जानकारी कोतवाली पुलिस को दी जिस पर पुलिस मौके पर पहुंची तथा घायल को आनन फानन में राजकीय चिकित्सालय लेकर पहुंची जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस की सूचना पर परिजन भी मौके पर पहुंचे जिनका रो-रोकर बुरा हाल हो गया। बाद में पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना के संबंध में परिजनों ने पुलिस को तहरीर दी थी। पुलिस ने बताया कि आरोपित चालक की तलाश की जा रही है।

भूमि के ठेके के पैसे मांगने पर विपक्षी दे रहा धमकी

बनत निवासी ग्रामीण ने डीएम से की कार्रवाई करने की मांग
मुजफ्फरनगर विधायक पंकज मलिक को भी सुनाई अपनी पीडा

युरेशिया संवाददाता

शामली। कस्बा बनत निवासी एक ग्रामीण ने विपक्षी पर उसकी भूमि को ठेके पर लेकर बुआई करने व ठेके के पैसे मांगने पर धमकी देने व भूमि खाली न करने का आरोप लगाते हुए डीएम से कार्रवाई की मांग की है। वहीं ग्रामीण ने शामली पहुंचे विधायक पंकज मलिक को भी अपनी पीडा बताते हुए कार्रवाई कराने की मांग की है।जानकारी के अनुसार कस्बा बनत निवासी रविन्द्र सिंह ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रार्थना पत्र देते हुए बताया कि हींड निवासी एक ग्रामीण से भूमि का बैनामा कराया था लेकिन विपक्षियों ने उक्त भूमि को फिर से ठेके पर लेकर बुआई का काम शुरू कर दिया था। उसने बीच-बीच में विपक्षी से अपनी भूमि के ठेके के पैसे मांगे तो विपक्षी आनाकानी करने लगा। जब उसने विपक्षी से अपनी भूमि को छोडने को कहा तो उसने कब्जा छोडने से इंकार कर दिया तथा उसे धमकी देनी शुरू कर दी। पीडित ने प्रशासन से उसकी भूमि को खाली कराने तथा तीन वर्ष के ठेके के पैसे दिलाने की मांग की। इसी दौरान कलेक्ट्रेट पहुंचे मुजफ्फरनगर विधायक पंकज मलिक भी पहुंचे जहां पीडित ग्रामीण ने विधायक को अपनी पीडा बताते हुए कार्रवाई कराने की गुहार लगायी। विधायक पंकज मलिक ने एडीएम से फरियादियों की समस्याओं का समाधान कराने का अनुरोध किया है। एडीएम ने ग्रामीण ने उसकी समस्या का जल्द समाधान करने का आश्वासन दिया।

मंदिर में घुसकर मारपीट के आरोपितों पर नहीं हुई कार्रवाई

अटल विहार निवासी पीडित लोगों ने अब डीएम से लगाई गुहार लगाया आरोपः तहरीर देने के बावजूद भी पुलिस ने कर रही कार्रवाई

युरेशिया संवाददाता

शामली। शहर के मौहल्ला अटल विहार स्थित मंदिर में भजन कीर्तन व शर्बत वितरण के दौरान कुछ युवकों द्वारा महिलाओं से छेडछाड व विरोध करने पर मारपीट के मामले में पीडितों ने पुलिस पर आरोपितों के खिलाफ कार्रवाई न करने का आरोप लगाते हुए डीएम से गुहार लगायी है।

जानकारी के अनुसार मंगलवार को मौहल्ला अटल विहार निवासी मामचंद, शुभम, सन्नी, पिंटू आदि ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रार्थना पत्र देते हुए बताया कि पिछले दिनों वे मौहल्ले में स्थित मंदिर में भजन कीर्तन व मीठे शर्बत का वितरण कर रहे थे, इसी दौरान दर्जनों युवक वहां पहुंचे तथा महिलाओं के साथ छेडछाड शुरू कर दी। जब उन्होंने इसका विरोध किया तो उक्त युवकों ने लोहे की रॉड व लाठी डंडों से उन पर हमला बोल दिया जिसमें कई युवक व महिलाएं घायल हो गयी। बाद में हमलावर मौके से फरार हो गए। उन्होंने आरोपितों के खिलाफ कोतवाली पुलिस को भी तहरीर दी थी लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पीडितों ने डीएम से मामले की जांच कराकर आरोपितों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

पानीपत में करंट लगने से झिंझाना के युवक की मौत

पानीपत में स्टील की दुकान पर काम करता था युवक, परिजनों में कोहराम
बिना किसी कार्रवाई के परिजनों ने शव को किया सुपुर्दे खाक

युरेशिया संवाददाता

झिंझाना। कस्बे के युवक की पानीपत में स्टील का कार्य करते समय करंट लगने से मौके पर ही मौत हो गई मौत की सूचना पर परिजनों में कोहराम मच गया रात्रि करीब दो बजे बिना किसी कार्रवाई के परिजनों ने मृतक युवक को सुपुर्द ए खाक कर दिया। मृतक चार भाइयों में तीसरे नंबर का था तथा उसके पिता राज मिस्त्री का कार्य करते हैं।

झिंझाना के गांव रंगाना हाल निवासी मौहल्ला ईदगाह निवासी शमीम पुत्र अब्दुल पानीपत में स्टील की दुकान पर कार्यरत था। परिजनों ने बताया कि वेल्डिंग करते समय शमीम को करंट लग गया तथा मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मौत की सूचना दुकानदार ने परिजनों को दी। सूचना पर परिजनों में कोहराम मच गया। परिजनों ने बताया कि उन्होंने बिना कार्रवाई किए पानीपत से मृतक के शव को लाकर कस्बे के कब्रिस्तान में रात्रि करीब दो बजे सुपुर्द ए खाक कर दिया है। मृतक चार भाइयों में तीसरे नंबर का था तथा एक बहन माता-पिता को रोता बिलखता छोड़ गया है। मृतक के पिता राजमिस्त्री का कार्य करते हैं। मौत की खबर पर कस्बे के पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष नौशाद ठेकेदार, असलम मलिक व अन्य लोग शोक संवेदना प्रकट करने के लिए मृतक के घर पहुंचे। ईदगाह कॉलोनी में युवक की मौत से शोक की लहर है।

नाले पर स्लैब न रखने से आए दिन हो रहे हादसे

नगर पंचायत की कार्य प्रणाली से लोगों में बढ रहा आक्रोश

युरेशिया संवाददाता

झिंझाना। नगर पंचायत द्वारा करीब 25 दिन पूर्व नाला सफाई कार्य कराया गया था। जिसमें नाले की स्लैब 25 दिन गुजर जाने के बाद भी नहीं रखने से आए दिन हादसे हो रहे हैं। कस्बे वासियों ने नगर पंचायत अध्यक्ष को इस बारे में अवगत कराया, लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ। नगर पंचायत की कार्य प्रणाली से लोग नाराज हैं।

कस्बे के मुख्य मार्ग स्थित मोहल्ला शेखा मैदान में नगर पंचायत द्वारा करीब 25 दिन पूर्व पुलिया की स्लैब उठाकर नाला सफाई कार्य कराया गया था। करीब 5 दिन पूर्व नगर पंचायत कर्मचारी द्वारा नाले की उल्टी सीधी तीन स्लैब रख दी गई। जिससे आए दिन फ्लों की रेहड़ी वाले, बाइक, बाइक रेहड़ा आदि हादसों का शिकार होते रहते हैं। जिनसे गरीब रेहड़ी वालों को अधिक नुकसान हो रहा है। वहीं कस्बे के लोगों में अब्दुल वहीद, अखलाक राना, शाहदीन, बिलाल, शमशाद अली, तारीफआलम, इरफान का आरोप है कि 25 दिन गुजारने के बाद भी नगर पंचायत ने नाले की स्लैब को ठीक तरीके से नहीं रखवाया जिससे हादसे हो रहे हैं। उन्होंने आलाधिकारियों से कार्रवाई करने की मांग की है।

घर में घुसकर दम्पति को घायल किया

युरेशिया संवाददाता

झिंझाना। क्षेत्र के गांव लपराना निवासी व्यक्ति ने गांव के तीन महिलाओं सहित आठ लोगों पर घर में घुसकर मारपीट करने एवं जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। सोमवार की शाम को क्षेत्र के गांव चंद्रपाल पुत्र गिरधारी ने पुलिस को तहरीर देते हुए बताया कि गांव के ही सतीश, नरेंद्र, अर्जुन,मुकोल, प्रवीण सहित गीता,रामदुलारी, अंजलि ने लाठी डंडे से लेस होकर मेरे घर में घुसकर गाली गलौज करते हुए हमला कर दिया जिसमें आरोपियों ने मुझे ओर मेरी पत्नी मुनेश को मारपीट कर घायल कर दिया ओर जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गये। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी धर्मेन्द्र सिंह ने बताया मामले की तहरीर आयी थी मुकदमा दर्ज कर जांच के बाद कार्यवाही की जाएगी

भैंसे के रुपए ना देने का आरोप

युरेशिया संवाददाता

कांधला। कोतवाली कैराना निवासी अकबर ने क्षेत्र के गांव गंगेरु निवासी कई लोगों पर भैंसे के रुपए ना देने का आरोप लगाया है। पीड़ित ने थाने पर तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। कैराना कोतवाली के कैराना निवासी अकबर ने थाने पर तहरीर देते हुए बताया कि लगभग चार माह पहले थाना शेत्रबके गांव गंगेरू निवासी कई युवकों ने भैंसा खरीदा था और एक माह में रुपए देने का वादा किया था। आरोप है कि उक्त लोग भैंसे के रुपए नही दे रहे है और रुपए मांगने पर जान से मारने की धमकी भी दे रहे है। पीड़ित ने स्थानीय थाने पर तहरीर देकर कार्यवाई की मांग की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

ससुराल पक्ष पर विवाहिता बेटी को छुपाने का आरोप

कांधला। जनपद बागपत निवासी पिता ने अपनी बेटी के ससुराल पक्ष पर बेटी को गायब करने व सही जवाब न देने का आरोप लगाया है। पीड़ित पिता ने स्थानीय थाने पर तहरीर देकर कार्यवाई की मांग की है।

जनपद बागपत के गांव असारा निवासी बिजेंद्र वर्तमान में कोतवाली क्षेत्र के नगर एलम ईंट भट्टे पर कार्य कर रहा है। मंगलवार को पीड़ित ने स्थानीय थाने पर तहरीर देते हुए बताया कि लगभग चार वर्ष पूर्व उसकी बेटी ने जनपद मुज्जफरनगर निवासी युवक से कोर्ट मैरिज की थी। कोर्ट मैरिज के काफी दिनों बाद पीड़ित और परिवार ने बेटी से फोन पर बातचीत करनी शुरू कर दी थी। पीड़ित के अनुसार दो तीन दिन पहले पीड़ित की बेटी का फोन आया और आरोप लगाया कि पति सहित ससुराल पक्ष के लोग उसका मानसिक और शारीरिक रूप से शोषण कर रहे है। आरोप है कि पीड़ित की बेटी को ससुराल पक्ष के लोगो ने गायब कर रखा है। पीड़ित पिता ने थाने पर तहरीर देकर बेटी की बरामदगी की गुहार लगाई है। पुलिस ने पीड़ित को कार्यवाई का आश्वाशन दिया है।

नील गाय के आने से क्षतिग्रस्त हुई इनोवा, परिवार बचा

युरेशिया संवाददाता

जलालाबाद। दिल्ली सहारनपुर नेशनल हाईवे पर नील गाय आने से एक इनोवा कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई । जिसमे सवार पूरा परिवार बाल बाल बच गया। कार मे सवार श्रद्धालु खाटू श्याम से दर्शन कर सहारनपुर लौट रहे थे। सहारनपुर न्याय विभाग मे कार्यरत उतेश जौहरी अपने परिवार सहित बाबा खाटू श्याम के दर्शन कर अपनी इनोवा कार से सहारनपुर लौट रहे थे देर रात जब वह जलालाबाद मे शिव हनुमान मन्दिर के निकट पहुचे तो उनकी कार के सामने अचानक नील गाय आ गई जिसे बचाने के प्रयास मे उनकी कार फुटपाथ पर चढकर दुघर्टना ग्रस्त हो गई गनीमत रही की परिवार को गम्भीर चोटे नही आई जिसके बाद सूचना पर मौके पर पहुची पुलिस ने परिवार को टैक्सी कराकर सहारनपुर के लिए रवाना कर दिया। दुघर्टना के वक्त उतेश जौहरी गाडी खुद चला रहे थे।

दैनिक युरेशिया टीम सहारनपुर मंडल

समाचार, सूचना, विज्ञापन के लिए संपर्क करें।

मोनु कश्यप (जिला प्रभारी)	मो0: 8630402509
प्रदीप धीमान (मण्डल प्रभारी)	मो0: 9997171951
अरविंद चौहान (गंगोह प्रभारी)	मो0: 9759693305
मोनीन (नागल प्रभारी)	मो0: 9639221277
अश्वनी धीमान (नानौता प्रभारी)	मो0: 9720509609
नाथीराम सहल (चिलकाना प्रभारी)	मो0: 6397074075
नादिर (तहसील बेहट प्रभारी)	मो0 9870984665
विकास शर्मा (तहसील नकुड़ प्रभारी)	मो0: 6396576517
शक्ति चौधरी (सरसावा प्रभारी)	मो0: 9719777268
मनोज कंबोज (बिहारीगढ़ प्रभारी)	मो0: 9675196324
सुनील कुमार सैनी (छुटमलपुर प्रभारी)	मो0: 9758712680
परवीन खानम (अंबेहटा पीर रिपोर्टर)	मो0: 8410360786
शौकीन अहमद (निर्जापुर प्रभारी)	मो0 9720067900

एक नजर..

जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने ग्राम सचिवालय साकरौद का निरीक्षण

युरेशिया संवाददाता

बागपत । जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने ग्राम सचिवालय साकरौद का निरीक्षण किया जिसका निर्माण कार्य पूण नहीं मिला जिसके लिए जिलाधिकारी ने पी डब्लू डी ए ई व खंड विकास अधिकारी खेकड़ा की जांच कमेटी गठित की है जो पंचायत सचिवालय के निर्माण कार्य की जांच कर जिला अधिकारी को प्रस्तुत करेगी पंचायत घर में गंदगी मिलने पर, तारों की फिटिंग सही नहीं मिलने पर और पंचायत सचिवालय में घास मिलने पर उन्होंने नाराजगी व्यक्त करी उसमें सुधार करने के निर्देश दिए उन्होंने कहा जहां प्रत्येक गांव के आम आदमी से जोड़ा कार्यालय है वह इतना गंदा होगा तो गांव की स्थिति क्या होगी उन्होंने गांव के साथ-साथ पंचायत घर की भी साफसफाई करने के निर्देश दिए।

अलीपुरतटबंध पर 3 करोड़ 59 लाख रुपए की परियोजना के अंतर्गत 8.4 किलोमीटर सड़क का मरम्मत कार्य किया

युरेशिया संवाददाता

बागपत। यमुना नदी के तट पर खेकड़ा तहसील क्षेत्र के के अंतर्गत अलीपुरतटबंध पर 3 करोड़ 59 लाख रुपए की परियोजना के अंतर्गत 8.4 किलोमीटर सड़क का मरम्मत कार्य किया जा रहा है जिसका आज जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने निरीक्षण किया सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता को जल्द से जल्द कार्य गुणवत्ता के साथ संपूर्ण करने के निर्देश दिए उन्होंने कहा बरसात का समय आने वाला है कार्य शीघ्र पूर्ण हो जाना चाहिए जिस किसी भी तरह की कोई समस्या ना हो और जनपद के जितने भी तटबंध हैं उनका स्थलीय निरीक्षण अवश्य किया जाए और जो कमियां रह गई है उन्हें तत्काल दुरुस्त किया जाए तटबंध से संबंधित किसी भी तरह की लापरवाही को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा ।

जीपीएफफंड भुगतान की मांग को लेकर शिक्षको ने किया प्रदर्शन

नीलकंठ/ युरेशिया

बागपत सेवानिवृत शिक्षकों के जीपीएफफंड भुगतान की मांग को लेकर शिक्षक नेता जितेंद्र तोमर द्वारा धरना प्रदर्शन किया गया। जिसके लिए उन्होंने डीएम व डी आई ओ एस को नोटिस जारी किया था। उन्होंने बताया कि 12 व 19 जून वर्ष 23 व वर्ष 24 में सेवानिवृत्त हुए प्रधानाचार्य प्रवक्ताओं एवं शिक्षकों तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को उनके जी पी एफफंड भुगतान नहीं हुआ है। पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार भुगतान नहीं होने पर 25 जून से अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया गया। डीएम महोदय बागपत के आश्वासन के बाद दस जूलाई तक धरना प्रदर्शन स्थगित किया गया।उन्होंने चेतावनी दी 15 जूलाई तक जी पी एफफंड भुगतान नहीं होने पर फिर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया जाएगा धरने पर चेतनारायण गुट के प्रदेश उपाध्यक्ष कोमबीर तोमर, मेरठ परिक्षेत्र प्रभारी स्वराज पाल दुहून, जिलाध्यक्ष राजबीर तोमर,जिला मंत्री हरिन्द्र नाथ सहाय, उपाध्यक्ष राजेंद्र तोमर पूर्व जिलामंत्री जितेन्द्र तोमर, पूर्व अध्यक्ष ओमबीर तोमर, कंवररपाल सिंह, नरेशपाल तोमर आदि ने सहयोग किया। सहयोग करने पर सभी का शिक्षक नेता जितेन्द्र तोमर ने आभार व्यक्त किया।

वीरांगना म्यूजियम में नीरा आर्य की प्रतिमा लगाई जाये : तेजपाल

विपुल जैन / युरेशिया

बागपत। साहित्यकार तेजपाल सिंह धामा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना और एनडीएमसी के उपाध्यक्ष सतीश उपाध्याय को पत्र लिखकर दिल्ली के कनॉट प्लेस इलाके में स्थित ऐतिहासिक गोल मार्केट में बन रहे वीरांगना संग्रहालय में नीरा आर्य की प्रतिमा लगाने की मांग की है।

उन्होंने कहा कि नीरा आर्य ने दिल्ली के शाहदरा में पति से विच्छेद के बाद डेढ़ महीना गरीब बच्चों को पढ़ाया था। बता दें कि दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) को निर्देश दिया है कि वह अगले साल जुलाई तक प्रतिष्ठित गोल मार्केट को संग्रहालय के रूप में बहाल करने का काम पूरा कर ले। पिछले साल अक्टूबर में गोल मार्केट का काम शुरू हुआ था, जबकि इसकी डेडलाइन अक्टूबर 2025 रखी गई थी। प्रस्तावित संग्रहालय का विषय वीरांगना है, जो आजादी के आंदोलन, साहित्य, संस्कृति, खेल, शिक्षा, राजनीति, स्वास्थ्य, प्रदर्शन और दृश्य कला सहित विभिन्न क्षेत्रों और पृष्ठभूमि की प्रतिष्ठित महिलाओं के जीवन और उपलब्धियों को प्रदर्शित करेगा, जिन्होंने राजधानी शहर को गौरवान्वित किया है।

गुरु को समर्पित भंडारे का किया आयोजन

गुरु अपने ज्ञान के प्रकाश व आशीर्वाद से अपने शिष्यों का जीवन बनाता है, सरल धूम सिंह पूर्व चेयरमैन।

नीलकंठ /युरेशिया

छपरौली। क्षेत्र के गाँव तिलवाड़ा में महाराज श्री राम की 26 वी पुण्यतिथि पर चेयरमैन धूमसिंह द्वारा विशाल भंडारा आयोजित किया गया। प्रतिवर्ष की भांति आयोजित भंडारे में दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों सहित क्षेत्र के हजारों प्रबुद्ध व्यक्तियों ने प्रसाद ग्रहण किया ।प्रातः काल यज्ञ एवं महाराज श्री राम के चित्र पर पुष्पांजली अर्पित करके भंडारा प्रारंभ किया गया।

यज्ञ पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए चेयरमैन धूमसिंह ने कहा गुरु की प्रतिछाया में हम ईश्वर और माता पिता के दर्शन करते हैं। गुरु ही हमें धर्म पर चलने की शिक्षा एवं ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताता हैं। गुरू अपने आशिर्वाद व ज्ञान से अपने शिष्यों के जीवन को सरल बनाते हैं। सांसारिक शरीर रूप में न होते हुए भी वें स्मृति में हमारे साथ हैं। उनके नाम पर समर्पित ये भंडारा गुरुवर को समर्पित पुष्पांजलि हैं। आयोजित भण्डारे में मुख्य रूप से गौरव टिकैत, संदीप उज्जवल पूर्व मंत्री, ओमबीर तोमर पूर्व राज्यमंत्री, कुलदीप उज्जवल पूर्व राज्यमंत्री, वीरपाल पूर्व विधायक, जसबीर सोलंकी, अपर आयुक्त अमित कुमार, चेयरमैन धूम सिंह, समाजसेवी आर0आर0डी0 उपाध्याय, मा0 कृष्णपाल शर्मा, चौ0 सुमनपाल, प्रधान धर्मेन्द्र सिंह, प्रधान जसबीर सिंह, बिजेन्द्र सिंह, अनिल कुमार, ठेकेदार संजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

व्यापारियों नेता ने व्यापारियों की समस्याओ को लेकर वित्तमंत्री को लिखा पत्र

अर्थ दंड वापस करने और जीएसटी मे टेक्स दरो को घटाने की उठाई मांग।

नीलकंठ /युरेशिया

बागपत। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष भूपेश बब्बर ने वित्तमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार को व्यापारियो की समस्याओ से अवगत कराते हुए तथा व्यापारियों द्वारा वाणिज्य विभाग में जमा कराये गए, जुर्माने को लेकर एक पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने बताया कि,वस्तु एवं सेवा कर परिषद की 53वे बैठक में जो निर्णय लिए गए सराहनीय है। इसमें विशेष रूप से वर्ष 2017-18 से प्रारंभ करके 2021 तक वाणिज्य कर विभाग द्वारा जारी की गई, नोटिस जुर्माना अर्थ दंड से संबंधित सभी प्रकार की कार्रवाइयों को वापस लिए जाने का फैसला सराहनीय है।उन्होंने शासन से मांग करते हुए बताया कि, जिन व्यापारियों ने दबाववश जुर्माना अर्थदंड जमा कर दिया है,वह उनको वापस किया जाए। और इस पूरे प्रकरण में व्यापारी अगर किसी अधिकारी के द्वारा अनावश्यक प्रताड़ित किया गया है, तो उसके खिलाफ भी दंडात्मक कार्यवाही की जाए। उन्होंने व्यापारियों के हितो को ध्यान मे रखते हुए जीएसटी में टैक्स की दरों को घटाने और टैक्स देने वालों का दायरा बढ़ाये जाने की मांग की।उन्होंने पंजीकरण की प्रक्रिया सुलभ करने के लिए कहा जिससे

पंजीकरण बढ़ेगा,व्यापारी उद्यमी की संख्या जीएसटी में बढ़ेगी, निश्चित रूप से सरकार का राजस्व भी तेजी के साथ बढ़ेगा। साथ ही व्यापारी को यह भरोसा दिलाया जाए कि जीएसटी का पंजीकरण करने से उसका विकास होगा विनाश नही।

आपातकाल में कांग्रेस ने बुनियादी स्वतंत्रता को किया नष्ट -मनोज पोशवाल

आपातकाल दिवस को भाजपा ने मनाया काला दिवस।

नीलकंठ /युरेशिया

बागपत। 25 जून 1975 में देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री रहीं स्व.इंदिरा गांधी की ओर से लगाई गई इमरजेंसी के विरोध में मंगलवार को भाजपा नेताओं ने काला दिवस के रूप में मनाया तथा इस पर संगोष्ठी आयोजित की। भाजपा के जिला कार्यालय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मनोज पौशवाल ने मौजूद कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपातकाल इस देश में आजादी की दूसरी लड़ाई की तरह था। सत्ता पर काबिज रहने के लिए देश में आपातकाल लगाया गया। मीडिया पर शिकंजा कसा गया। उन्होंने कहा आपातकाल का काला दिवस हमें याद दिलाता है कि कांग्रेस पार्टी ने बुनियादी स्वतंत्रताओं को नष्ट किया और भारत के उस संविधान को रौंदा, जिसका हर भारतीय बहुत सम्मान करता है। उन्होंने कहा कि आज देश? प्रदेश के साथ-साथ बागपत में भी अच्छी सड़कें हैं। बागपत से दिल्ली की दूरी दो घंटे से आधे घंटे में हो गयी है। तीन- तीन एक्सप्रेस-वे बागपत जिले को मिले हैं। अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष वेदपाल उपाध्याय ने कहा कि कांग्रेस से असहमत होने वाले हर व्यक्ति को प्रताड़ित किया गया। सबसे कमजोर वर्गों को निशाना बनाया गया और सामाजिक रूप से प्रतिगामी नीतियां लागू की गईं। कार्यक्रम में आपातकाल के समय प्रताड़ना झेलने वाले एवं उनके परिजनों का शौल उड़कर उनका सम्मान किया गया। संचालन जिला महामंत्री व कार्यक्रम संयोजिका सरिता चौधरी ने किया।

इस दौरान जिला महामंत्री एडवोकेट बिजेंद्र शर्मा, विनोद बाल्मीकि, जिला उपाध्यक्ष राकेश जैन, कवरपाल गुर्जर, जिला मीडिया प्रभारी पवन शर्मा, महेन्द्र भड़ाना, जिला मंत्री सत्यपाल उपाध्याय, सुधीर ठाकुर, मंडल अध्यक्ष संदीप वशिष्ठ, सत्यबीर सिंह बड़का, मनीष कुशवाहा, सन्दिप प्रजापति, मंजीत गुर्जर, कपिल देव दोघट, देवेन्द्र खौखर, मंडल प्रभारी डॉ विनय त्यागी, आत्माराम मौर्य, सराफ्त अली, अंजू खौखर, प्रीतिभा शर्मा डिमरी, रोकी शर्मा, पदम सिंह, सचिन आर्य आदि मौजूद रहे।

लोकसभा चुनाव मे योगदान देने के लिए स्वंयसेवी अमन कुमार सम्मानित

नीलकंठ /युरेशिया

बागपत। जिले के ट्यौढी गांव निवासी युवा अमन कुमार द्वारा लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दौरान दिए गए स्वैच्छिक योगदान के लिए जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह द्वारा सम्मानित किया गया। नेहरू युवा केन्द्र बागपत के जिला युवा अधिकारी अरुण तिवारी के नेतृत्व में युवा अमन कुमार द्वारा बनाए गए, स्वीप बागपत एप के माध्यम से निर्वाचन में ई गवर्नेंस को बढ़ावा मिला। और मतदाताओं को भारत निर्वाचन आयोग की विभिन्न सुविधाओं से जोड़ा गया। जिला स्वीप कोर कमेटी में तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में भी अमन कुमार ने सराहनीय कार्य किया जिसके लिए जिलाधिकारी द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। वहीं अमन कुमार ने कहा कि जिले के युवाओं को अपने हुनर के बल पर अपने गांव समाज के लिए संपदा बनने के प्रयास करने चाहिए। लोकतंत्र की खूबसूरती, जनभागीदारी और जनसहयोग में है।

एम एजुकेशन में चल रहे शिविर में बच्चों ने सीखा शिष्टाचार का पाठ

नीलकंठ /युरेशिया

बागपत। ऐम एजुकेशन पब्लिक स्कूल छपरौली में चल योग शिविर के पाँचवे दिन योग शिक्षार्थीयों को योगाभ्यास के साथ शिष्टाचार व अनुशासन का पाठ पढाया गया। वैदिक विद्धवान मास्टर ऋषिपाल आर्य ने कक्ष को सम्बोधित करते हुए कहा अनुशासन विद्यार्थी के जीवन में ही नहीं अपितु सभी व्यक्तियों के जीवन में महत्वपूर्ण है। अनुशासन के बिना व्यक्ति शिक्षित होते हुए भी शिक्षित नहीं कहलाता। अनुशासन हमें समाज, राष्ट्र, ईश्वर और मानवता को समर्पित विकसित व्यक्तिव वाला जागरूक नागरिक बनाता है। जब हम अनुशासित होते है समाज के प्रति हमारा और हमारे प्रति समाज दृष्टिकोण बदल जाता है, लोग हमे विशेष श्रेणी का व्यक्ति मानने लगते है। इस अवसर पर मास्टर, ऋषिपाल आर्य, प्रधानाचार्य जितेन्द्र कुमार आर्य, समाजसेवी आरआरडी उपाध्याय, योग शिक्षक हरेन्द्र आर्य, दयानंद आर्य, हिमांशु आर्य, नरेन्द्र आर्य, विशाल दुहुण, वीरेन्द्र, विजयन्त, युवराज सुर्या उपाध्याय, देव, अर्जुन, देवांश, केशव, रोहन, अर्पित, गौरव, हर्षित, शिवम, कार्तिक, शिवा आदि उपस्थित रहे।

कांवड़ मेले की तैयारियों के संबंध में जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने की बैठक

शासन की संवेदनशीलता को समझे अफसर सकुशल संपन्न कराये कावड़ यात्रा

संबंधित केंद्रों के आधार पर सभी रूटों पर दूरी के अनुसार लगाए जाएं साइनेज बोर्ड

भगवान की सेवा के लिए और श्रद्धालुओं की आस्था के लिए तत्परता से कार्य करें संबंधित अधिकारी

कावड़ यात्रा को सकुशल संपन्न कराए जाने में दे अपना योगदान

कांवड़ मार्ग पर ही लगाए जाएंगे शिविर और बनाए जाएंगे कांवड़ मार्ग प्रभारी

कावड़ मार्ग पर पड़ने वाली चिकन व शराब की दुकान पूर्णत रहेंगी बंद

मेले में सड़क पर नहीं लगाई जाएंगी दुकाने

शिव भक्तों को सम्मान और उन्हें मूलभूत सुविधाएं देना हमारी प्राथमिकता

युरेशिया संवाददाता

बागपत । जनपद बागपत पुरा महादेव मंदिर के लिए भी जाना जाता है जिस पर प्रतिवर्ष श्रावण मास में शिवरात्रि का विशाल मेला लगाया जाता है जिसमे लाखों श्रद्धालु कावड़ लेकर ,जल लेकर परशु रामेश्वर पुरा महादेव मंदिर पहुंचते हैं और जलाभिषेक करते हैं जिसका मुख्य पर्व 2 अगस्त 2024 को आ रहा है जिस के क्रम में जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह व पुलिस अधीक्षक अर्पित विजयवर्गीय ने आज संबंधित विभागों के अधिकारीयो व मेला समिति के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में कावड़ यात्रा को सकुशल संपन्न कराए जाने के संबंध में आवश्यक बैठक कर संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए ।जिलाधिकारी ने कहा भगवान की सेवा के लिए और श्रद्धालुओं की आस्था के लिए श्रावण मास की शिवरात्रि के मेले की तैयारी में अधिकारी अपने विभाग से संबंधित अपना शत प्रतिशत दें श्रद्धालुओं को कावड़ मार्ग पर या अपने गंतव्य स्थान तक जाने के लिए बागपत जनपद की सीमा में किसी भी तरह की कोई समस्या सामने नहीं आनी चाहिए श्रद्धालुओं का सम्मान और उन्हें सुविधा देना हमारी मुख्य प्राथमिकता है जिस पर शासन गंभीर है शासन की संवेदनशीलता को समझ कर अधिकारी अपने दायित्वों का निर्भन करें उन्होंने कहा मेले को बहुत ही भव्य और दिव्य रूप दिया जाए। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि कांवड़ मार्ग पर साफ सफाई की पर्याप्त व्यवस्था हो जिन स्थानों पर सड़क टूट-फूट है उन्हें तत्काल ठीक कराए जाने के अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी को निर्देश दिए साफसफाई के निर्देश नगर पंचायत, नगर पालिका और डीपीआरओ को दिए उन्होंने कहा जो गांव कावड़ मार्ग पर पढ़ते हैं उनमें विद्युतीकरण शत प्रतिशत ठीक होना चाहिए किसी भी स्थान पर जमीन पर ट्रांसफार्मर रखा ना हो , प्रकाश व्यवस्था पर्याप्त रहे कावड़ मार्ग पर जो ड्यूटी पॉइंट बनाए जाएं उन पर संबंधित कार्मिक का नाम और मोबाइल नंबर साइनेज बोर्ड पर अवश्य लिखा हो जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिए कि कांवड़ मार्ग में किसी भी स्थान पर गूलर का पेड़ की टहनी अगर मार्ग पर आ रही हैं तो उन्हें तत्काल साफकरा दिया जाए और गूलर के पेड़ पर लाल झंडे को संकेत के रूप में लगाया जाए । जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि कांवड़ मार्ग पर लाइटों की पर्याप्त व्यवस्था हो जगह-जगह साइनेज बोर्ड लगे हो और किस दिशा में कौन सा केंद्र बना हुआ कितनी दूरी पर है साइनेज बोर्ड पर यह आवश्यक लिखा हो जिससे कि श्रद्धालुओं को किसी से जानकारी लेने के लिए परेशान होना ना पड़े साइनेज बोर्ड के आधार पर श्रद्धालु अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच जाएं और कावड़ मार्ग के सभी हैंडपंप सुचारु रुप से संचालित रहे जिन स्थानों पर शिविर लगाए जाएं उनके पास पानी का टैंक ,टॉयलेट की व्यवस्था ,चिकित्सा व्यवस्था, हेल्पलाइन नंबर डिस्प्ले हो जिससे कि एक स्थान पर ही व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार सुविधाओं का लाभ ले सके जिससे कि श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की की कावड़ मार्ग में समस्या ना आए । किसी भी बिजली के खंबे के पास शिविर ना लगाए जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी खाद सुरक्षा विभाग का सर्टिफिकेट अवश्य हो शिविर में काम करने वाले व्यक्तियों का पुलिस सत्यापन हो शिविर के पास टॉयलेट की व्यवस्था डस्टबिन की व्यवस्था आदि व्यवस्था होनी चाहिए ।

जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग को निर्देश दिए कि जिन स्थानों पर जर्जर तार ,जर्जर पोल है उन्हें तत्काल परिवर्तित किया जाए और जमीन पर रखे ट्रांसफार्मर की बैरिकेडिंग की जाए कांवड़ मार्ग पर पड़ने वाले पोल पर पन्नी लगाई जाए प्रकाश व्यवस्था का बिशेष ध्यान दिया जाए।

खाद सुरक्षा विभाग को निर्देश दिए कि प्रत्येक दुकान पर रेट लिस्ट लगी हो ,रेट लिस्ट का निर्धारण करें शिविरों पर वृहद स्तर पर चेकिंग की जाए किसी भी मीट की दुकान को खोलने की अनुमति नहीं दी जाए कावड़ मार्ग पर पढ़ने वाली समस्त शराब की व मीट की दुकान पूर्णत बंद रहेंगी ,जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिए हैं कि जिन स्थानों पर चिकन की दुकान है चिकन डिस्प्ले बोर्ड को भी कपड़े के माध्यम से कवर किया जाए जिससे कि वह पढ़ने में ना आए। कांवड़ मार्ग पर पड़ने वाले सभी सीसीटीवी कैमरे सुचारु रुप से संचालित रहे।

जिलाधिकारी ने मेला समिति को निर्देश दिए कि सड़क पर दुकान ना लगे सड़क पर आवागमन होगा और कावड़िया रहेंगे दुकानों के लिए अलग जगह चिन्हित करें पार्किंग की व्यवस्था अच्छी होनी चाहिए और वैलेंटीयर एक ड्रेस में हो और सभी का पुलिस सत्यापन हो।

जिलाधिकारी ने कहा कांवड़ मार्ग पर टेक्नोलॉजी को बढ़ावा दिए जाने के लिए भी मैपिंग व्यवस्था की जाएगी जिससे कि श्रद्धालु को पता चल सके कि कितने स्थान पर क्या केंद्र है जगह-जगह श्रद्धालुओं को साइन बोर्ड भी लगे मिलेंगे और हेल्पलाइन नंबर भी लगे होंगे बागपत में आने वाले श्रद्धालुओं का स्वागत होगा और उन्हें जिला प्रशासन द्वारा अधिक से अधिक सुविधा दिए जाने के प्रयास रहेंगे बागपत की पहचान है पुरा महादेव मंदिर उसे और अधिक से अधिक श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र बनाया जाएगा।

पुलिस अधीक्षक अर्पित विजयवर्गीय ने कहा समस्त थाना अध्यक्ष व पुलिस क्षेत्राधिकार अपने-अपने क्षेत्र के डीजे संचालक शिविर संचालकों के साथ बैठक कर ले कावड़ मार्ग से जुड़े हुए बिंदुओं पर आवश्यक चर्चा करें।

इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी पंकज वर्मा, अपर पुलिस अधीक्षक नरेंद्र प्रताप सिंह मुख्य विकास अधिकारी नीरज कुमार श्रीवास्तव, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ महावीर कुमार, समस्त एसडीएम ,समस्त पुलिस क्षेत्राधिकारी सहित जनपद स्तरीय अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

संपादकीय

लोकतंत्र की दरकार
अब पक्ष-विपक्ष मिलकर चलाएं सरकार

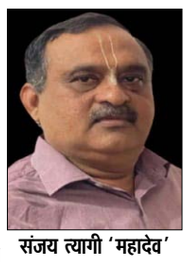

संजय त्यागी 'महादेव'

देश में लंबे चले चुनाव अभियान और चुनाव परिणाम के बाद अस्तित्व में आयी 18वीं लोकसभा के पहले सत्र की शुरुआत हो चुकी है। राजग की लगातार तीसरी पारी गठबंधन सरकार के रूप में सामने आई है। निश्चित रूप से इस बार विपक्षी गठबंधन पिछले दशक के मुकाबले ज्यादा मजबूत बनकर उभरा है। लेकिन लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव से ठीक पहले राहुल गांधी का विपक्ष का नेता चुना जाना साफबताता है कि आने वाले दिनों में राजग सरकार की राह आसान नहीं रहने वाली। इस संक्षिप्त सत्र के दूसरे दिन लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव को लेकर सत्ता-पक्ष व विपक्ष के बीच जो तनातनी सामने आई, वह पिछले सात दशकों के मुकाबले अभूतपूर्व है। विपक्ष एक ओर लोकसभा उपाध्यक्ष पद देने की मांग कर रहा था, तो सत्ता पक्ष ऐसा करने को तैयार नहीं था। जाहिर इस टकराव के बीच लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए चुनाव कराने की स्थितियां बनी हैं। हालांकि, राजग सरकार के पास चुनाव पूर्व गठबंधन के चलते पूर्ण बहुमत है, लेकिन विपक्ष इस चुनाव को अपनी एकजुटता के रूप में एक प्रतीकात्मक दबाव के रूप में दिखाना चाहेगा। बहरहाल, बेहतर होता कि लोकसभा में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पदों पर चयन सत्ता पक्ष व विपक्ष के बीच सहमति से होता। इसी तरह नवनिर्वाचित लोकसभा सदस्यों को शपथ दिलाने के लिये नियुक्त प्रोटेम स्पीकर की नियुक्ति को लेकर भी सत्ता पक्ष व विपक्ष में तनातनी देखी गई। वरिष्ठता के क्रम में इंडिया गठबंधन की ओर से कांग्रेस की दावेदारी की गई थी। बहरहाल, 18वीं लोकसभा की शुरुआत में ही पक्ष-विपक्ष के बीच तनातनी की शुरुआत स्वस्थ लोकतंत्र के लिये अच्छा संकेत तो कदापि नहीं है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि 17वीं लोकसभा के दौरान टकराव के चलते तमाम सत्रों में कामकाज बुरी तरह प्रभावित रहा। उल्लेखनीय है कि दिसंबर, 2023 में शीतकालीन सत्र के दौरान लोकसभा में घुसपैठ के मामले में बहस की मांग पर कथित दुर्व्यवहार हेतु 141 विपक्षी सांसदों को निलंबित किया गया था। जिसमें 95 लोकसभा सदस्य थे।

उम्मीद की जानी चाहिए 18वीं लोकसभा में वैसे दृश्य फिर न देखने को मिलें। जनता अपने प्रतिनिधियों को इस लिये चुनकर संसद में भेजती है ताकि वे उनके इलाके के विकास को नई दिशा दे सकें। लेकिन पहले दिन विपक्षी नेताओं द्वारा संसद में संविधान की प्रतियों के साथ एकजुटता दर्शाना और कतिपय सत्तारूढ़ दल के सांसदों के शपथ ग्रहण के दौरान नारेबाजी को देखकर लगता है कि विपक्ष ज्यादा मुखर होकर सरकार के लिये चुनौती पेश करता रहेगा। बहरहाल, किसी भी लोकतंत्र की खूबसूरती इस बात में है कि सरकार सहमति से चले। साथ ही विपक्ष भी जिम्मेदार भूमिका में नजर आए। कुल मिलाकर हंगामे, बहिष्कार व नारेबाजी के बजाय रचनात्मक व गरिमामय भूमिका की दरकार है।

हाथी दर्शन से संचालित खाती-पीती राजनीति तिरछी नजर

केदार शर्मा

जंगल में एक दिन एक युवा हाथी को एक वृद्ध हाथी मिला। युवा हाथी निराशा से भरा था, कह रहा था 'जंगल समाप्त हो गए हैं, इंसानी बस्तियों का दखल बढ़ता जा रहा है। हाथियों का अब वो रुतबा नहीं रहा।'वृद्ध हाथी ने समझाया 'भइए! तू अभी इंसानों की संगत में रहा नहीं। मैं रहा हूं और मेरा तजुर्बा कहता है कि भले ही जंगलराज अब न रहा हो पर धीरे-धीरे कई राज भीड़ के जंगलों में तब्दील होते जा रहे हैं। रही हाथियों की बात तो हाथी भले ही उतनी संख्या में नहीं रहे हों पर इंसान तेजी से हाथियों का दर्शन अपनाता जा रहा है। हाथी रहें या न रहें, पर उनका दर्शन हमेशा रहेगा। हम हाथी कोई सामान्य प्राणी नहीं हैं, हमारे अंग-अंग में प्रेरणाएं छुपी हुई हैं।जो भी प्राणी हाथी दर्शन को आत्मसात? कर लेता है और जितनी ऊंची पद-प्रतिष्ठा हथिया लेता है वह उतना ही स्वार्थ में मदमस्त होकर मस्तानी चाल चलने लगता है। वह परवाह करना छोड़ देता है कि उसके आगे-पीछे, अगल-बगल में कौन पुकार रहा है, कौन व्यथा सुना रहा है, कौन समस्या बता रहा है, उसे कोई सरोकार नहीं रहता है। वह उनको श्वान की भांति समझता है जिनका काम है भौंकना और उसका स्वयं का काम है चुपचाप चलते रहना।'युवा हाथी ने जिज्ञासा व्यक्त की 'सुना है हाथियों में भी सफेद हाथियों का बड़ा रुतबा है?'वृद्ध हाथी हंसने लगा, बोला, 'हां, सफेद हाथी का जिसे दर्जा मिल जाता है उसे करना कुछ नहीं पड़ता और चारा-पानी सब बैठे बिठाए ऑटोमेटिक मिलता जाता है। जहां जाता है वहां पुष्पहार पहनाए जाते हैं। चंदन लगाया जाता है। जिसने पिछले जन्म में घोर 'पुण्यकर्म' किए हों, वह पुण्यात्मा ही अगले जन्म में सफेद हाथी की प्रतिष्ठा का सुखोपभोग करता है।'वृद्ध हाथी ने आगे बताना जारी रखा 'संसार में हम हाथी ही ऐसे बेमिसाल प्राणी हैं जिनके खाने के दांत अलग और दिखाने के दांत अलग होते हैं। जिस-जिसने भी हमारे इस दर्शन को अपनाया है, वे खाते भी खूब हैं, जमकर खाते हैं, पर उनके खाने के दांत निंदित नहीं होते बल्कि अभिनंदित होते हैं। उनके दिखाने के दांत संघों में, सभाओं में, ट्रस्टों में मुक्तदंत से अवदान देते हैं। इस दांत खाते हैं उस दांत देते हैं। दिखने वाले दंत खाने वाले दंतों के खावपन को आवृत्त रखते हैं। हां, खाने वाले दांत कितने भी सख्त और भद्दे क्यों न हों, दिखने वाले दांत मनमोहक और सॉफ्ट होने चाहिए।

ग्यारसपुर की बारह सौ वर्ष प्राचीन प्रतिमा

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन ''मनुज', इन्दौर

श्रमण संस्कृति के पुरातत्त्व का परिचय मध्यप्रदेश के विदिशा जिलान्तर्गत आने वाले ग्यारसपुर के पुरातत्त्व का उल्लेख किये बिना पूर्ण नहीं होता। ग्यारसपुर में मालादेवी मंदिर और बजरामठ जैन मंदिर 9वीं-10वीं शताब्दी में एक पहाड़ी पर कुछ पहाड़ी काटकर बनाये गये। यहाँ की पच्चीसों तीर्थंकर मूर्तियाँ व सरस्वती, चक्रेश्वरी, अम्बिका आदि शासन देवी-देवों का उल्लेख प्राचीनता के कारण कई पुराविदों ने अपनी पुस्तकों, आलेखों आदि में किया है। इसी पहाड़ी के लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर श्री 1008 दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चौबीसी मन्दिर है। इस मंदिर का कई बार जीर्णोद्धार हुआ। वर्तमान में भी जीर्णोद्धार हुआ है। इसके जीर्णोद्धार की ताम्र-प्रशस्ति बनने हेतु जब मेरे पास आई तब यहाँ की प्रतिमाओं की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ। यहाँ कई प्राचीन प्रतिमाएँ हैं, जिसपर सम्भवतः पुराविदों का ध्यान नहीं गया।

चौबीसी जैन मंदिर ग्यारसपुर (विदिशा) म. प्र. की प्राचीन मूर्तियाँ –मनुज

पार्श्वनाथ चतुर्विंशतिका प्रतिमा

ग्यारसपुर का चौबीसी मन्दिर क्षेत्र कमेटी के अधीन है। सभी पूज्य प्रतिमाएँ हैं और प्रतिदिन अभिषेक पूजा होती है। यहाँ एक 4 फीट 9 इंच उत्सेधवाली भूरे बलुआ पाषाण की तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा है, यह कायोत्सर्ग मुद्रा में है। इसका कमलपुष्प से अलंकृत पादपीठ है, जिसके दोनों ओर एक-एक आराधिका बैठी हुई हैं। दायें ओर की आराधिका पादपीठाभिमुख अंजलिबद्ध है, बांई ओर की आराधिका के दाहिने हाथ में पूजा का कुछ द्रव्य है, वह सम्मुख है। पार्श्वनाथ-प्रतिमाजी के दोनों पार्श्वों में चँवरधारियों के स्थान पर तीर्थंकर के यक्ष-यक्षी ललितासन मुद्रा में हैं। प्रतिमाशास्त्रानुसार दाहिनी ओर चतुर्भुज यक्ष है, जिसके आयुध-कमलनाल, फल और वरदमुद्रा है। बांई ओर बैठी यक्षी की भी चार भुजाएँ हैं। दो हाथों में कमलनाल, एक में फल और एक वरदमुद्रा में है। यक्ष-यक्षी दोनों के शिर पर तीन-तीन सर्प-फण दर्शाये गयो हैं, जो भग्न हैं। इन दोनों यक्ष-यक्षी के पादपीठ में भी कमल-पुष्प रेखांकित है। मुख प्रतिमा के पीछे से ऊपर को जाती हुई सर्पकुण्डली बनाई गई है, जो ऊपर जाकर तीर्थंकर के शिर पर सप्तफणों का छत्र बनाये हुए है। पारम्परिक त्रिछत्र भी है। प्रतिमा के उदर पर त्रिवली, वक्ष पर श्रीवत्स, कर्णों का स्कंधस्पृष्टन और सुन्दर उष्णीष युक्त कुंचित केश हैं। परिकर में बायें ओर ग्यारह और दाँई ओर बारह पद्मासनस्थ लघु जिन प्रतिमाएँ हैं। इस तरह परिकर की 23 और 1 मूलनायक मिलाकर चौबीसी बनती है। वितान में सप्तफण के दोनों ओर माल्यधारी गगनचर देव हैं, त्रिछत्र के ऊपर दुंदुभिवादक दर्शाया गया है, जो कुछ भग्न है। धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षी तथा सप्त सर्पफणों के अंकन से यह पार्श्वनाथ प्रतिमा है, और परिकर में 23 अन्य तीर्थंकर होने से चतुर्विंशतिका अभिहित की जाती है। ग्यारसपुर की प्रतिमाओं के चित्र हमें विदिशा के डॉ. पं. महेन्द्र जैन 'विस्किट' के सहयोग से सुलभ जैन ने सुलभ करवाये हैं।

विश्लेषण- इस प्रतिमा के परिकर में चॅवरवाहक नहीं हैं, जबकि 10वीं शताब्दी के उपरान्त की प्रायः सभी सपरिकर प्रतिमाओं में चॅवरवाहक अनिवार्यरूप से उत्कीर्णित किये जाने की परम्परा है। भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित जैन कला एवं स्थापत्य के प्रथम भाग में ग्यारसपुर टेकरी के मंदिरों की प्रतिमाओं का एक चित्र प्रकाशित हुआ है, जिसमें बहुत निचली पत्थर की चहार दीवारी के सहारे खुले आकाश में पाँच प्रतिमाएँ रखीं हैं। उनमें एक खण्डित चतुर्विंशतिका प्रतिमा भी है, जो 9वीं शताब्दी की निर्धारित की गई है। उस प्रतिमा से प्रस्तुत चौबीसी प्रतिमा में समानता है। चॅवरवाहकों की अनुपस्थिति, आराधक, यक्ष-यक्षी के अंकन आदि समान विशेषताएँ हैं। अतः यह प्रतिमा एक ही स्थान, समान पाषाण, समान शिल्पांकन के कारण उसके समकालीन 9वीं शताब्दी की है।

अन्य प्राचीन प्रतिमाएँ

उपरोक्त प्रतिमा के साथ ही वेदिका पर कई अन्य प्रतिमाएँ हैं। उनमें कुछ तो अर्वाचीन हैं और कुछ अत्यंत प्राचीन हैं। उनमें श्वेत पाषाण की संवत् 1593 की पद्मासन चन्द्रप्रभ भगवान, संवत् 1665 कायोत्सर्गस्थ पार्श्वनाथ, श्याम पाषाण की पद्मासनस्थ चार लघु प्रतिमाएँ हैं। इनमें दो में एक-एक पंक्ति की प्रशस्ति है। एक में उल्टा स्वस्तिक बना है जो तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की हो सकती है। एक श्वेत पाषाण की कायोत्सर्गस्थ पार्श्वनाथ की प्रतिमा है, इसके पादपीठ पर प्रशस्ति है, किन्तु वेदी पर स्थित किये जाने के कारण सफेद सीमेन्ट लगने से अवाच्य है। यहाँ एक और पार्श्वनाथ की धातु की पद्मासन प्रतिमा उल्लेखनीय है। इसके 11 फणों का फलक व पादपीठ अलग भी हो जाते हैं। इस प्रतिमा के तलुओं व हथेलियों में रेखाएँ तो हैं ही, हथेली पर दो पुष्प और अंगूठे पर गुलाब-पुष्प का पत्र बना है। इस तरह की प्रतिमा अन्यत्र देखने में नहीं आयी है।

योग दिवस पर एक ही दिन में बने कई विश्व रिकॉर्ड

योगेश कुमार गोयल

योग का भारत में संस्कृति के साथ सदियों पुराना जुड़ाव है बल्कि यूं भी कह सकते हैं कि भारत में योग की शुरूआत भारतीय संस्कृति के साथ ही जुड़ी है। भारत ने पूरी दुनिया को योग करना सिखाया है और भारत के कारण ही दुनिया के तमाम देश अब योग की महत्ता को समझने लगे हैं। करीब 5000 वर्ष पहले भारत से शुरू हुई योग की परंपरा शरीर और मन के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन प्राप्त करने के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अनुशासन को जोड़ती है। 'योग' शब्द संस्कृत से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'जुड़ना' अथवा 'एकजुट होना', जो शरीर और चेतना के मिलन का प्रतीक है। भारत की प्राचीन परंपराओं में गहराई से निहित योग वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य और आध्यात्मिक कल्याण के प्रतीक के रूप में कार्य करता है। 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में योग को वैश्विक मान्यता मिलने के बाद से पिछले 10 वर्षों में योग दिवस पर कई रिकॉर्ड बने हैं।

2015 से लेकर अब तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के नाम कई रिकॉर्ड 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में दर्ज हो चुके हैं। 2015 में पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिल्ली में राजपथ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ कुल 35985 भारतीयों ने एक साथ योग करके सबसे बड़े योग सत्र का पहला विश्व रिकॉर्ड बनाया था जबकि दूसरा रिकॉर्ड एक ही स्थान पर योग सत्र में कुल 84 देशों के भाग लेने पर बना था। योग को लेकर एक विश्व रिकॉर्ड तब बना था, जब 2018 में राजस्थान के कोटा में करीब 1.05 लाख लोगों ने एक साथ योगाभ्यास किया था। 2023 में दुनियाभर से कुल 23.4 करोड़ लोगों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में भाग लेकर भी विश्व रिकॉर्ड कायम किया था, वहीं 2023 में ही गुजरात के सूरत में योग दिवस कार्यक्रम में योग सत्र में 1.53 लाख लोगों ने एक साथ हिस्सा लेकर नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था। उस योग कार्यक्रम के लिए करीब 300 मीटर चौड़ी दो सड़कों के 4 किलोमीटर लंबे हिस्से को योग प्रतिभागियों कालीन से ढ़का गया था। उससे पहले यह रिकॉर्ड 2018 में राजस्थान के कोटा शहर के नाम दर्ज था, जहां योग सत्र में करीब एक लाख लोग जुटे थे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर इस वर्ष तो कई रिकॉर्ड बने। देश-विदेश में फैली आध्यात्मिक संस्था ब्रह्माकुमारीज ने भी इस अवसर पर एक नया रिकॉर्ड कायम किया। ब्रह्माकुमारीज के आबूरोड़ स्थित अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय के साथ 140 देशों में फैले इसके 9000 केंद्रों पर करीब एक करोड़ लोगों ने एक साथ योग किया जबकि आबूरोड़ स्थित मुख्यालय पर 10 हजार लोगों ने एक साथ योगाभ्यास किया। वहीं, हिमालयन सिद्ध योग गुरु अक्षर के दूरदर्शी नेतृत्व में तो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर एक नया इतिहास रचा गया। 'अक्षर योग केंद्र' ने 5 विशिष्ट योगासनों का वैश्विक मानकों पर सफलतापूर्वक प्रदर्शन करके 5 नए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए और 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में आयोजित इस स्पर्धा के जरिये योग की सार्वभौमिक अपील यानी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए इसके गहन लाभों का संदेश पूरी दुनिया देने का प्रयास किया गया। इन पांच वैश्विक कीर्तिमान स्थापित करने वाले आसनों में नौकासन, कौंडिन्य आसन (ऋषि कौंडिन्य मुद्रा), चक्रासन, भगवान शिव की एक मुद्रा नटराजासन, पांच मिनट तक लगातार सूर्य नमस्कार का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया।

हालांकि अक्षर योग केंद्र ने त्रिपुरा वासिनी, पैलेस ग्राउंड, बेंगलुरु में प्रभावशाली वैश्विक भागीदारी में सांस्कृतिक और भौगोलिक सीमाओं को पार करने की योग की क्षमता को प्रदर्शित करते हुए कुल सात आसनों के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए प्रयास किया था लेकिन गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की अंतर्राष्ट्रीय टीम ने सभी मानकों का अध्ययन करने के बाद इनमें से पांच आसनों में रिकॉर्डों को मान्यता प्रदान की जबकि दो आसनों पर रिकॉर्ड की मान्यता अभी समीक्षाधीन है, जिन्हें विचार के लिए लंदन भेजा जाएगा। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के वरिष्ठ निर्णायक स्वप्निल डांगरीकर और ऋषिनाथ के मुताबिक 5 रिकॉर्ड सफलतापूर्वक पूरे किए गए थे। इसकी पुष्टि करते हुए स्वप्निल डांगरीकर का कहना था, ''मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि टीम अक्षर योग केंद्र ने सफलतापूर्वक 5 नए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड खिताब स्थापित किए हैं और मुझे याद नहीं आता कि मैंने एक ही दिन में इतने सारे गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रमाणपत्र दिए हैं।''

अक्षर योग केंद्र द्वारा ये विश्व रिकार्ड बनाने के लिए आयोजित कार्यक्रम में सभी क्षेत्रों से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था, जिनमें छात्र, अनाथालयों के बच्चे, व्यापारिक समुदाय के सदस्य और कॉरपोरेट घराने भी शामिल थे। इसमें भाग लेने वाले एनसीसी ग्रुप 'ए' बेंगलुरू के 1200 से अधिक एनसीसी कैडेटों का भी विशेष योगदान रहा। उनके साथ उप महानिदेशक, एनसीसी डीटीई कर्नाटक और गोवा, ग्रुप कमांडर, एनसीसी ग्रुप मुख्यालय 'ए' बेंगलुरु, कमांडिंग ऑफिसर, एसोसिएट एनसीसी अधिकारी, ग्रुप 'ए' एनसीसी बटालियन के स्थायी प्रशिक्षक भी इस भव्य आयोजन का हिस्सा थे। इस गरिमामय समारोह में 20 से अधिक विभिन्न देशों के प्रतिभागी शामिल हुए थे। हिमालयन सिद्ध योग गुरु अक्षर के अनुसार योग दिवस के मौके पर ये रिकॉर्ड बनाने का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर योग के असंख्य लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना, दुनियाभर के लोगों को समग्र स्वास्थ्य और आंतरिक शांति के लिए इस अभ्यास को एकीकृत करने के लिए प्रोत्साहित करना है। हिमालयन सिद्ध अक्षर के नेतृत्व में इस अवसर पर योग के गहन प्रभावों पर भी प्रकाश डाला गया, साथ ही समर्पित अभ्यास के माध्यम से अनुशासन का प्रदर्शन किया गया।

उल्लेखनीय है कि शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्पष्टता और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित अक्षर योग केंद्र इसके विविध लाभों को प्रदर्शित करने के लिए नियमित रूप से फिटनेस शिविर, मुद्रा कार्यशालाएं और ध्यान सत्र आयोजित करता है। हिमालयन सिद्ध अक्षर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित एक आध्यात्मिक योग गुरु हैं, जो अक्षर योग केंद्र के संस्थापक, अध्यक्ष, पाठ्यक्रम निदेशक, विश्व योग संगठन के अध्यक्ष तथा अंतरराष्ट्रीय सिद्ध फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं। योग गुरु अक्षर का कहना है कि योग शरीर, मन और आत्मा का एक अभिन्न अंग है। योग इन तत्वों को एकजुट करता है और मानवता के लिए एक अनमोल उपहार के रूप में कार्य करता है। एक साथ पांच विश्व रिकॉर्ड कायम करने की उपलब्धि को लेकर उनका कहना है कि यह अविस्मरणीय घटना वास्तव में लोगों के लिए एक आशीर्वाद है, जो उन्हें योग के अभ्यास को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। यह दुनियाभर में एक शक्तिशाली संदेश भेजती है, जिससे हर किसी को योग के गहन महत्व और इसके लाभों का अहसास होता है। इसके अलावा यह उपलब्धि हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को उजागर करती है, साथ ही समग्र स्वास्थ्य और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने में वैश्विक नेता के रूप में भारत की स्थिति को भी मजबूत करती है।

अक्षर योग केंद्र द्वारा एक साथ बनाए गए पांच विश्व रिकॉर्ड के अलावा एशियन योग चौंपियनशिप की स्वर्ण पदक विजेता 20 वर्षीया भूमि तिवारी ने भी जश्न-ए-आजादी ट्रस्ट और भारतीय आदर्श योग संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में मोती महल के लॉन में आयोजित 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम के दौरान 'रामदूत आसन' की मुद्रा को निरंतर 35 मिनट और 27 सैकेंड तक बनाए रखते हुए नया कीर्तिमान स्थापित किया। भूमि के मुताबिक 'रामदूत आसन' में पैरों को विपरीत दिशाओं में सबसे ज्यादा फैलाना और फिर सामने वाले पैर की उंगलियों को छूने के लिए झुकना होता है और यह सबसे कठिन, 'डी' श्रेणी का आसन है, जिसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चौंपियनशिप में 0.9 अंक प्राप्त हुआ है। भूमि तिवारी द्वारा बनाए गए इस नए रिकॉर्ड की सूचना 'योगासन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड काउंसिल' को दी गई है।

पंजाब को चाहिए सर्वांगीण विकास का दृष्टिकोण

गुरबचन जगत

(मणिपुर के पूर्व राज्यपाल)कुछ दिन पहले मैं किताबों की दुकान पर यह देखने गया कि नया क्या आया है। मैंने कुछ किताबें चुनीं और बाहर निकलने ही वाला था कि एक युवा महिला कहने लगी कि वह मुझ से कुछ बात करना चाहती है। मैं उसे और दिल्ली में उसके परिवार को बहुत अच्छी तरह जानता हूं। वह काफी उद्वेलित लग रही थी और उसने सीधे मुझसे सवाल दागा कि लोकसभा चुनाव में अमृतपाल सिंह और सरबजीत सिंह खालसा की जीत के पंजाब के भविष्य को लेकर क्या मायने हैं। मैंने उसका डर दूर करने की कोशिश की, लेकिन पूरी तरह कामयाब नहीं हो पाया। किताबों की दुकान जैसे सौम्य माहौल में हुई इस दोस्ताना बहस ने मुझे हिला दिया और अचानक शुरू हुए इस संवाद से पैदा हुई विचार प्रक्रिया को मैंने झटकने का प्रयास किया। मैं घर पहुंचा, तभी रिश्ते में अग्रज लगते भाई का फोन आया, जो सेना में ऊंचे ओहदे से एक सेवानिवृत्त अधिकारी हैं और इन दिनों पंजाब में बसे हुए हैं। उन्होंने भी पूछा कि पंजाब में क्या चल रहा है। मैंने उन्हें भी नरमी भरी बातों से इस चिंता से निकालने की कोशिश की और सुझाव दिया कि वे और उनकी पत्नी कुछ दिनों के लिए कहीं घूम आएं। अगले कुछ दिनों तक मुझे पंजाब से रिश्तेदारों, मित्रों और परिचितों की अनेक फोन कॉल्स आईं, सब एक जैसे सवाल पूछ रहे थे, आधी गंभीरता, आधे उत्साह युक्त। पंजाब में एक दशक तक चली हिंसा की सुनामी के वक्त भी, सतह के नीचे, चिंता की तरंगें थीं। तो क्या गुजरा अतीत, वर्तमान और भविष्य बनने जा रहा है?

हिंसा की उस कहानी को पकने में कई साल लगे थे और मैं उनमें एक हूं जिन्होंने अपनी आंखों से इसे आगाज से अंत तक घटित होते देखा। आम धारणा के विपरीत, अंतिम काली छाया तक पहुंचने से पहले, इसने विकसित होने में कई साल लिए थे और इस बुरी कहानी के नाटकीय पात्र सर्वविदित हैं। शतरंज की बिसात पर मोहरे चलाने वाली राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों के बारे में भी सबको पता है, लेकिन ग्रीक कहानियों में त्रासदी की नियति की भांति हम भविष्य के वक्त की चाल को देख तो सकते हैं लेकिन दखल देकर उसकी धारा को मोड़ नहीं दे सकते और त्रासदी है कि वह अपनी राह पर चलते हुए, रक्तरंजित अंजाम को पा जाती है। यह सब बहुत पहले की बात नहीं है और जनता की याद ?दाश्त वैसे भी कमजोर होती है3 तो क्या हम फिर पुनरावृत्ति की राह पर हैं? मैं यह तो नहीं कहना चाहूंगा लेकिन फिर सरकार चुप क्यों हैं? राजनीतिक दल क्यों चुप्पी साधे हुए हैं? मीडिया किसलिए मूक है और सिविल सोसायटी भी चुप क्यों हैं? कहां से आये हैं ये दो लोग और किस प्रकार संसद के सदस्य तक चुन लिए गये हैं? यही वक्त है ऐसे सवाल पूछने का और यही समय है जब सरकार और

राजनीतिक दल इनके जवाब दें। आज की तारीख में लगता है राजनीतिक दलों का एक ही ध्येय है दृ संसद, विधानसभा, नगर निकाय और पंचायत के चुनाव लड़ना और जीत पाना। उनकी एकमात्र इच्छा सभी स्तरों पर ताकत हासिल करना है, बगैर किसी जवाबदेही के। सरकार को अब तक पता होना चाहिए था कि लोग चिंतित हैं, पंजाब में क्या हुआ, इन चुनावी नतीजों की व्याख्या करने को उसे मूल कारण तक गहरे उतरना चाहिए, यहां तक कि कंगना रनौत थप्पड़ कांड में भी।

पिछले दो दशकों में सरकारें बनीं और गईं, लेकिन उनमें किसी एक ने भी 1980 और 1990 के दशक में जो कुछ हुआ, उसकी वजहें जानने की कोशिश नहीं की, और न ही कोई सबक लिया। किसी सरकार ने युवाओं की शिक्षा, रोजगार, बुनियादी ढांचा विकास और उद्योग स्थापना के लिए बृहद योजना नहीं बनाई। कहने का अर्थ यह नहीं कि पंजाब में कोई विकास नहीं हुआ। हरित क्रांति और इसके बाद के सालों ने पंजाब को सुनहरे दिन दिए और भारत को अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। एक आईआईटी, एक आईएमएम, एक उच्चकोटि का मेडिकल शिक्षा संस्थान और सड़क तंत्र जरूर बना है लेकिन यह बहुत कम और बहुत देर से हुआ और अधिकांश अंदरूनी ग्रामीण इलाका आज भी पुरानी पड़ चुकी कृषि अर्थव्यवस्था और बंटवारे के बाद छोटे होते खेतों से घटती कमाई के चक्र में फंसा हुआ है, जिससे किसान के सिर पर भारी कर्ज चढ़ जाता है और वे आत्महत्या तक कर लेते हैं। रोजगार के स्रोत जैसे कि सशस्त्र सेना में भर्ती भी सिकुड़ी है, लिहाजा विदेशी मुल्कों की ओर बड़े पैमाने पर युवाओं का पलायन हो रहा है। इसके चलते नौजवान और बड़ों में रोष सुलग रहा है जिसका दोहन अतिवादी तत्व कर सकते हैं। राजनेताओं की प्रवृत्ति झूठे वादे, मुफ्त की रेवड़ियां बांटने और मिथ्या आंकड़ों से बहलाने की होती है, इससे स्थिति और बिगड़ती हैदृ वे किसे बेवकूफ बनाने का प्रयास कर रहे हैं? नशे का सेवन पूरे देश में आम हो चला है और देशभर में इसकी रोकथाम के रूप में महज यहां-वहां की जा रही छापेमारी है या छोटी मछलियां पकड़ी जाती हैं। नशा माफिया का एक भी बड़ा व्यापारी या इसमें पूंजी लगाने वाला गिरफ्तार नहीं हुआ है।

मुख्यधारा के राजनीतिक दल निरंतर धुर-दक्षिणपंथियों के लिए मैदान खाली छोड़ रहे हैं। हालिया लोकसभा चुनाव में, शिरोमणि अकाली दल का वोट शेयर घटकर 13.4 फीसदी रह गया। हालांकि 18.5 प्रतिशत वोटों के साथ भाजपा की कारगुजारी भी कोई बढ़िया नहीं रही। अकाली दल का प्रदर्शन 2022 के विधानसभा चुनाव में पाए 18.3 फीसदी वोटों से नीचे गिरा है। मैंने अकाली दल का नाम इसलिए लिया क्योंकि यह वह दल है जिसने कभी पंजाबी सूबा मोर्चा जैसे आंदोलन चलाए और कांग्रेस के बाद देश की दूसरी सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी है। दिवंगत प्रकाश सिंह बादल पांच बार मुख्यमंत्री बने और कद्दावर शख्सियत थे जिन्होंने राजनीतिक मुद्दों पर अपना अडिग रुख कायम रखते हुए अनेक बार जेलें काटी, इनमें इमरजेंसी से लेकर सतलुज-यमुना लिंक नहर को लेकर चलाए आंदोलन भी शामिल हैं। हालांकि अतिवादियों के दबदबे वाले 1980 और 90 के कालखंड में उनकी पार्टी ने भी अन्य मुख्यधारा दलों की भांति मूक-दर्शक बने रहना चुना था, जिससे कि सारा मैदान अतिवादियों के लिए खुला छूट गया। इससे आगे, आतंकवादियों के निर्देशों का पालन करते हुए उनकी पार्टी ने 1992 में हुए विधानसभा चुनाव का बहिष्कार किया था।

इसी प्रकार, हालिया इतिहास के सबसे बड़े किसान आंदोलन के वक्त कांग्रेस और उसका नेतृत्व नदारद रहा, जब दिल्ली में बनाई गई कृषि नीतियों के विरोध में पंजाबी किसानों ने मोर्चा लगाया। पंजाब जैसे कृषि प्रधान सूबे में इस किस्म की अनुपस्थिति दर्ज करवाकर कांग्रेस ने एक प्रकार से राजनीतिक आत्महत्या की है। बाद में, इसका सत्यापन विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली करारी हार के रूप में हुआ (आगे चलकर राज्यस्तरीय नेता भाजपा में चले गए)। उस समय पंजाबियों ने स्थापित राजनीतिक दलों और परिवारों को नकार दिया और आम आदमी पार्टी को मौका दिया। 'आप' हालांकि कोई विशेष प्रभाव नहीं बना पाई और इसका पता लोकसभा की 13 सीटों में केवल 3 पर मिली जीत से चलता है। इसका वोट शेयर 2022 के विधानसभा चुनाव में मिले 45 फीसदी मतों से घटकर लोकसभा चुनाव में 26 फीसदी रह गया। कहने का भाव यह कि मुख्यधारा के दल अपना जनाधार अमृतपाल जैसों के मुकाबले खोते जा रहे हैं, जिससे राजनीतिक बहसें तीखी और अतिशयी बन रही हैं। यह लगभग वैसा है जब अतिवादियों के फरमान का पालन करते हुए मुख्यधारा दलों को चुनाव का बहिष्कार करना पड़ा था। यह स्थिति सूबे और इसके लोगों के हित में नहीं है।

अब जबकि धुर दक्षिणपंथी अपने पुराने शबाब में लौटते दिखाई दे रहे हैं, पंजाब और भारत में सुरक्षा और शांति को खतरा बनेगा, नाना प्रकार की साजिश कथाएं फैलेंगी और अगर वक्त रहते सड़न को नहीं रोका तो जिस शांति को स्थापित करने में दशक लगे वह जाती रहेगी। इस सड़न के कारक हालांकि हकीकत से जुड़े हैं क्योंकि बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा के मुद्दों पर ध्यान देने से बचा जा रहा है। विकास सूचकांक में पंजाब काफी वर्ष पहले अपना अगुआई वाला स्थान गंवा चुका है और अब विकास एवं संवृद्धि के लगभग तमाम पैमानों पर निचली श्रेणी के सूबों के साथ अवस्थित है। राजनेता आग से खेल सकते हैं लेकिन किस कीमत पर? यही वक्त है जब मुख्यधारा के दल जोर लगाएं और लोगों को साथ जोड़कर अपनी गंवाई जमीन पुनः प्राप्त करें। परंतु आप लोगों को तभी जोड़ पाएंगे यदि आपके पास पूरे सूबे की भलाई के लिए दूरदृष्टि, ऐसा समावेशी नजरिया हो जो सभी नागरिकों के लिए तमाम मोर्चों पर नियोजित विकास करने वाला हो।

एक नजर..

थाना देवबंद पुलिस द्वारा नाबालिग के साथ कुकर्म के 1 वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

प्रदीप धीमान/युरेशिया

सहारनपुर। थाना देवबंद पर वादी द्वारा बाबत वादी के नाबालिक पुत्र उम्र 06 वर्ष के साथ कुकर्म करने के संबंध में थाना देवबंद पर मु0अ0स0 329/24 धारा 329/2024 धारा 377 भादवि व धारा 5ड/6 पोक्सो अधिनियम बनाम सुभाष पुत्र भोपाल निवासी ग्राम मोहद्दीनपुर थाना देवबन्द अधिनियम पंजीकृत किया गया।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डा0 विपिन ताड़ा सहारनपुर ने उक्त घटना का तत्काल संज्ञान लेकर अभियुक्त की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु आदेश – निर्देश दिए। आदेश के अनुपालन में पुलिस अधीक्षक ग्रामीण सागर जैन एंव क्षेत्राधिकारी देवबंद के निकट पर्यवेक्षण में तथा प्रभारी निरीक्षण संजीव कुमार के कुशल नेतृत्व में मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम द्वारा मुकदमा उपरोक्त में वांछित अभियुक्त सुभाष पुत्र भोपाल निवासी ग्राम मोहद्दीनपुर थाना देवबन्द सहारनपुर को मोहद्दीनपुर से गिरफ्तार किया गया । आवश्यक विधिक कार्यवाही कर समय से माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम उ0नि0 संजय सिह, हे0का0 रवि कुमार, का0 राहुल कुमार शामिल रहे।

थाना सरसावा प्रभारी सत्येन्द्र कुमार राय की पुलिस टीम ने पकड़ा एक शातिर वारंटी

शक्ति चौधरी/युरेशिया

सरसावा। थाना सरसावा प्रभारी सत्येन्द्र कुमार राय के कुशल नेतृत्व वाली पुलिस टीम उपनिरीक्षक रामवीर सिंह ने माननीय न्यायालय के आदेशों निर्देशो का सख्ती के साथ पालन करते हुए एक शातिर वारंटी नरेश पुत्र टीका राम निवासी ग्राम सुआंखेडी को गिरफ्तार किया गिरफ्तार किए गए अभियुक्त को समय से न्यायालय के समक्ष पेश किया जाएगा।

थाना सदर बाजार पुलिस द्वारा 1 शातिर मोटरसाइकिल चोर गिरफ्तार, बाईक बरामद

प्रदीप धीमान/युरेशिया

सहारनपुर। थाना सदर बाजार पर वादी राहुल वर्मा पुत्र साधुराम निवासी ज्ञान विहार कालोनी, भुतेश्वर मंदिर रोड, थाना मण्डी ने एक लिखित तहरीर बावत एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा उसकी मोटरसाइकिल चोरी कर लेने के संबंध में थाना सदर बाजार पर मु0अ0सं0 342/2024 धारा 379 भादवि पंजीकृत किया गया।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डा0 विपिन ताड़ा सहारनपुर द्वारा उक्त घटना का तत्काल संज्ञान लेकर जनपद मे अपराध नियंत्रण, मोटरसाइकिल चोरी की घटनाओ की रोकथाम व इसमें संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु दिशा निर्देश दिए। इसी क्रम में थाना प्रभारी सूबे सिंह के कुशल नेतृत्व में मुखबिर की सूचना पर थाना सदर बाजार पुलिस द्वारा मुकदमा उपरोक्त में वांछित अभियुक्त दिनेश उर्फ टिंकू पुत्र हेमराज उर्फ गब्बर नि0 ग्राम ताहरपुर थाना कोतवाली देहात जनपद सहारनपुर को काशीराम बस अड्डे के पास से गिरफ्तार किया गया। जिसके कब्जे से मुकदमा उपरोक्त मे चोरी हुई मोटरसाइकिल (यूपी11 बीएच 4116) बरामद हुई। बरामदगी व गिरफ्तारी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 411 की वृद्धि की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त के विरूद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही कर समय से माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम उ0नि0 शशांक गिरि, का0 विशाल, हे0का0 सचिन शामिल रहे।

कृषि फार्म से सोलर प्लेटें चोरी

मोमीन अली/युरेशिया

नागल। सोमवार रात किन्हीं अज्ञात चोरों ने टपरी मार्ग स्थित एक कृषि फार्म से डेढ़ लाख रुपयों से अधिक कीमत की सोलर प्लेटें चुरा ली। किसान ने घटना की तहरीर पुलिस को देते हुए कार्रवाई की मांग की है।

थाना क्षेत्र के पत्तेहपुर निवासी किसान सुबे सिंह का टपरी मार्ग पर खजूरवाला के निकट कृषि फार्म है जहां उसने अपने कृषि फार्म पर सौर ऊर्जा चलने वाला नलकूप लगवा रखा है। बीती रात उसके नलकूप से किन्हीं अज्ञात चोरों ने सौर ऊर्जा की चार सोलर प्लेटें जिनकी कीमत करीब डेढ़ लाख रुपये है चोरी कर ली। मंगलवार सुबह जब वह अपने खेत पर गया तो प्लेटें चोरी होने की घटना का पता चला।

संतोष मेडिकेयर हॉस्पिटल द्वारा निशुल्क दवाई शिविर का आयोजन

मनोज कांबोज/युरेशिया

बिहारीगढ़। आज बुधवार को बिहारीगढ़ क्षेत्र के ग्राम जैतपुर कला में प्राचीन शिव मंदिर के पास सुलेख चंद के आवास पर संतोष मेडिकेयर सेंटर बिहारीगढ़ के द्वारा प्रदीप चौहान के सहयोग से निशुल्क दवाई वितरण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 84 मरीज का इलाज किया गया। शिविर में पहुंचे 38 मरीज का ब्लड टेस्ट किया गया तथा 10 लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाए गए तथा लोगों को बदलते मौसम के विषय में बीमारियों से बचने के लिए सावधानी बरतने के टिप्स दिए गए। संतोष मेडिकेयर हॉस्पिटल के संचालक डॉक्टर प्रशांत की ओर से बताया गया कि हमारे हॉस्पिटल में आने वाले मरीजो को लाने ले जाने के लिए निशुल्क एंबुलेंस सेवा दी जाएगी। इस अवसर पर हॉस्पिटल का स्टाफ डॉक्टर रामधन सैनी, डॉक्टर आजम, फार्मासिस्ट सावेज, विष्णु कुमार, नेहा, वैष्णवी तथा आयुष्मान मित्र सचिन कुमार मौजूद रहे।

भारतीय किसान यूनियन टिकैत में जिला अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किये गये नरेश स्वामी

विकास शर्मा/युरेशिया

सहारनपुर। भारतीय किसान यूनियन टिकैत जिला सहारनपुर में नरेश कुमार स्वामी को जिला अध्यक्ष जनपद सहारनपुर बनाए जाने की खुशी में अपने मुख्य मुख्य सभी साथियों के साथ में जनपद सहारनपुर के हाई कमान व राष्ट्रीय सचिव चौधरी विनय कुमार से धन्यवाद अदा करने ओर शिष्टाचार भेंट करने के लिए उनके आवास पर पहुंचे भारतीय किसान यूनियन टिकैत के कार्यकर्ता आपको बता देती नरेश स्वामी पहले भारतीय किसान यूनियन अराजनीतिक के पद पर थे उनके साथ उनकी कुछ अनबन हुई जिसके कारण वह भारतीय किसान यूनियन टिकैत में पहुंच गए बता दे की नरेश स्वामी पहले भी भारतीय किसान यूनियन में कार्यरत रहे हैं भारतीय किसान यूनियन टिकट में ऊपर विश्वास करते हुए सीधी जिला सहारनपुर की जिला अध्यक्ष पर नियुक्त कर दिया।

इसी विषय में पुनीत चौधरी ने कहा नरेश स्वामी बड़े ही सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं उनके इस पद से भारतीय किसान यूनियन टिकैत के सभी कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल है वहीं पर शेखर चौधरी ने कहा नरेश स्वामी किसानो की लड़ाई के लिए हमेशा बढ़ चढ़कर किसानो की लड़ाई को लड़ते हैं और गलत बात उन्हें कभी सहन नहीं होती नहीं वह कभी गलत व्यक्ति का साथ देते हैं जिला अध्यक्ष नरेश स्वामी ने कहां भारतीय किसान यूनियन टिकैत ने जो मुझ पर विश्वास जाता है मैं उस पर खरा उतरने की कोशिश करूंगा किसानो की सारी समस्या को अपनी समस्या से अलग करके उनके लिए हर समय किसानों के बीच में उनकी लड़ाई को लड़ता रहुगा।

सहारनपुर में 41 दिन साधना के बाद साध्वी ने खोला उपवास

विश्व शांति को की गई प्रार्थना: महामंडलेश्वर सविता जमुनादास

अरविन्द चौहान/युरेशिया

सहारनपुर।अंतर्राष्ट्रीय महामंडलेश्वर साध्वी जमुना दास ने विश्व शांति के लिए जप तप तपस्या कर 41 दिन बाद खोला उपवास।

श्रीश्री1008 अंतर्राष्ट्रीय महामंडलेश्वर साध्वी जमुना दास ने 41 दिनों का उपवास कर मन को ईश्वर पर केंद्रित करते हुए विश्व शांति की प्रार्थना की उन्होंने मीडिया से जानकारी देते हुए बताया कि मंगलवार को 41 दिन बाद ऐश्वर्य साधना तपस्या के बाद उन्होंने अन्न ग्रह किया है। उन्होंने बताया की पूर्व जन्मों के शौभाग्यौ से मुझे साधु बनने का मौका मिला है मानव कल्याण एवंम मानव सेवा ही मेरा मुख्य उद्देश्य है में मानव सेवा के लिए में 24 घंटे तत्त पर हूँ। समाज में फैल रही विभिन्न प्रकार की कुरीतियों एवं अन्य बुराइयों के प्रति हमेशा से ही संत समाज ने ही आवाज उठाई है।कठोर साधना के बाद में नांगा साधु बनी हूँ हर रोज सहारनपुर जेल चुंगी मार्ग स्थित मेरे आश्रम पर अनेक भक्तगण अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के दुख लेकर आते हैं।और प्रभु इच्छा से मैं हर संभव उनका दुख निवारण करने का प्रयास करती हूँ, और निरंतर करती रहूंगी।त्रिकालदर्शी भगवान भोलेनाथ श्री गुरु गोरखनाथ महाकाली श्री शेरावाली बांके बिहारी खाटू श्याम आदि की महिमाओ से पीड़ितों के निवारण के लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं उनके घरों में सुख शांति के साथ-साथ सुख समृद्धि बनी रहे।आज 41 दिन के उपवास उपरांत मैंने अन्न ग्रहण किया है।

ओवरलोड खनन से भरे ट्रक ने वृद्ध को कुचला-मौके पर ही हुई मौत

अरविन्द चौहान/युरेशिया

गंगोह(सहारनपुर)। दवाई लेकर लौट रहे एक किसान को खनन से लदे ओवरलोड डम्पर ने कुचल डाला। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

गांव कलालहटी निवासी किसान प्रेमचंद पुत्र हुकमचंद 60 वर्ष सुबह लगभग 11 बजे गंगोह से बाइक पर दवाई लेकर गांव लौट रहा था कि उसके पीछे तेज गति से आ रहा खनन सामग्री से लदा ओवरलोड डम्पर बीनपुर गेट के समीप अनियंतित्र हो गया। डम्पर ने पहले सडक पर बने यात्री भवन में टक्कर मारी और उसके बाद आगे चल रहे प्रेमचंद उपाध्याय को कुचल डाला। प्रेमचंद बाइक सहित डम्पर के टायरों में फंस गया। राहगीरों के शोर मचाने पर डम्पर चालक वाहन सडक पर छोडकर फरार हो गया। मौके पर ग्रामीणों की भीड लग गई। 100 नम्बर व 112 सहायता गाडियों को सूचना दी गई। मगर उनके आने से पहले पहुंची पुलिस जब तक उसे निकाल पाती, वह दम तोड चुका था। गुस्सायें ग्रामीण एसडीएम को मौके पर बुलाने की मांग करने लगे। उनका कहना था कि अवैध खनन सामग्री से लदे ओवरलोड वाहन रोज दुर्घटना का कारण बन रहे है। इनका आवागमन रुकना चाहिए। बाद में मौके पर पहुंचे सीओ शशी प्रकाश शर्मा और तहसीलदार जसमिंद्र सिंह ने ग्रामीणों को समझा बुझाकर प्रभावी कार्रवाई का आश्वासन देकर शांत कराया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। ओवरलोड वाहनों के खिलाफ भी कार्यवाही का भरोसा दिलाया।

ग्रामीणों ने अवैध खनन करने का लगाया आरोप, धरने पर बैठे

शेख़ मौ नादिर/युरेशिया

बेहट। गांव के पास अवैध खनन करने का आरोप लगाते हुए ग्रामीण धरने पर बैठ गए। हालाकि ग्रामीणों के कड़े विरोध के चलते खनन करने पहुंचे कारोबारियों को बैरंग लौटना पड़ा। ग्रामीण अवैध खनन करने का आरोप लगाते हुए धरने पर बैठ गए। मामले को लेकर ग्रामीणों ने एसडीएम को लिखित शिकायत भी भेजी है।

मामला तहसील बेहट इलाके के गांव धौलाकुआं का है। बताया जाता है कि कुछ लोग गांव के पास ही खनन करने पहुंचे थे, लेकिन मौके पर ग्रामीण महिलाएं व पुरुष हाथो में लाठी डंडे लेकर मौके पर पहुंच गए और खनन होने से नदी का रुख गांव की ओर होने और आने वाली बरसात में उनके गांव में बाढ़ आने की आशंका का आरोप लगाते हुए खनन रुकवा दिया। ग्रामीणों ने बताया कि तहसील स्तर के अधिकारियों को फोन पर शिकायत की लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई जिसके बाद ग्रामीण धरने पर बैठ गए।

ग्रामीणों अनिल, हिमांशु, प्रवीण, दीपक, नाथीराम, कुशलपाल, मनीष, विनोद कुमार, ललित, शालू, प्रकाश, संदीप कुमार, अनुज कुमार, सौरभ, गरीबदास, राजपाल, राजा, हिमांशु , भरतू, लेखराज आदि ने हस्ताक्षरयुक्त शिकायत एसडीएम को भेजी है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि उनकी समस्या का समाधान नहीं होता तो वे अगली रणनीति बनाकर आंदोलन करेंगे। उधर जब इस बारे में एसडीएम बेहट दीपक कुमार से बात की गई तो उन्होंने बताया कि तहसीलदार को मौके पर भेजकर ग्रामीणों की समस्या का निस्तारण कराया जाएगा।

सरसावा हाइवे पर देर रात हुआ हादसा

शक्ति चौधरी/युरेशिया

सरसावा। देर रात हाई वे यमुनानगर की ओर से वास अपने घर सहारनपुर लौट रहे कार मे सवार दो युवकों की वकिसी अज्ञात वाहन ने जोरदार टक्कर मार दी जिसमें कार सवार एक युवक कीमौके पर ही मौत हो गई जबकि दूसरा साथी गंभीर रूप से घायल हो गया जिसे पुलिस की मदद से ईलाज के लिए राजकीय मेडिकल कॉलेज भर्ती कराया गया खबर मिलने पर मौके पर आए मृतक के परिवार के लोग बिना कोई कानूनी कार्रवाई किए बिना शव को अपने साथ ले गएसोमवार को देर रात सहारनपुर के कपिल बिहार निवासी कपिल राणा पुत्र अशु राणा आयु करीब तेईस वर्षीय व उसकसाथी अमन सेठी कार से यमुनानगर की ओर से वापस घर आ रहे थे जैसे ही उनकी कार शाहजहांपुर चौंकी क्षेत्र के शाहजहांपुर गांव के समीप पहुंची तभी किसी अज्ञात वाहन उनकी टक्कर हो गई टक्कर इतनी जबरदस्त थी की कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई कार में सवार कपिल राणा की मौकेमर ही मौत हो गई जबकि दूसरा साथी अमन सेठी गंभीर रूप से घायल हो गया जिसे पुलिस की मदद से ईलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया ।खबर मिलने पर मौके पर आए मृतक के परिवार के लोग कोई कानूनी कार्रवाई किए बिना शव को अपने साथ ले गए।

थानाध्यक्ष सत्येंद्र राय ने बताया कि सोमवार की देरातशाहजहांपुर के समीप सड़क दुर्घटना मे कार सवार कपिल राणा की मौके पर मौत हो गई मृतक के परिवार के लोगों ने कोई कानूनी कार्रवाई करने से मना करते शव को आपने साथ ले गए।

एक ही समुदाय दो पक्षों का मामूली विवाद संघर्ष मे हुआ तब्दील, एक घायल

शक्ति चौधरी/युरेशिया

सरसावा। थाना सरसावा के शाहजहांपुर पुलिस चौकी क्षेत्र के गांव समसपुर में एक ही समुदाय दो पक्षों में हुआ मामूली विवाद संघर्ष में तब्दील हो गया संघर्ष में एक युवक साहब पुत्र मुमताज गोली लगने से हुआ घायल पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल को अस्पताल में भर्ती कराया हैं और एक अन्य युवक आसिफके साथ भी की गई मारपीट पुलिस घटना की छानबीन करते हुए आरोपियों की घेरा बंदी मे जुट गई हैं!

घर में ही पूजा करते समय महिला को सांप ने काटा, मौत

अरविन्द चौहान/युरेशिया

गगोह। घर के अन्दर ही सर्पदंश का शिकार बनी महिला को न तो सरकारी अस्पताल और न ही झाडफूंक से बचाया जा सका। परिजनों ने उसका अंतिम संस्कार कर दिया। कोतवाली अर्न्तगत गांव पखनपुर निवासी राजकुमारी पत्नी जबरसिंह 50 वर्ष को सोमवार की सुबह घर में ही पूजापाठ करते समय सांप ने काट लिया। सर्पदंश का पता चलते ही परिजन बिना देर किये उसे लेकर गंगोह सीएचसी पहुंचे, जहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। बताया गया है कि इसके बाद घरवाले झाड़-फूक के चक्कर मे लग गए। मगर महिला की हालत बिगड़ती चली गई। जिसके चलते मंगलवार सुबह महिला की दर्दनाक मौत हो गई। परिजनों ने बिना किसी कार्रवाई के मृतका का अंतिम संस्कार कर दिया। महिला की अचानक हुई मौत से पूरा परिवार गमगीन हैं।

खाकी और खादी की सरपरस्ती में पनप रहा है, खनन माफियाओ का मकड़ जाल

विकास शर्मा/युरेशिया

गत दिवस गुप्त सूचना के आधार पर एसडीएम संगीता राघव ने नकुड़ क्षेत्र से अवैध खनन से भरे ट्रैक्टर ट्राली पकड़ी थी, इस कार्रवाई से प्रशासन की चारों ओर प्रशंसा हुई थी।

नकुड़। कल सुबह प्रशासन को सूचना मिली कि अवैध खनन से भरे वाहन नकुड़ से गुजर रहे हैं, इसके बाद तहसील प्रशासन एवं पुलिस बल ने विश्वकर्मा चौक पहुंच कर नाकेबंदी शुरू कर दी, कुछ ही देर में सरसावा की ओर से चार डंपर खनन से भरे आ रहे थे, उक्त लोगों ने सभी को पकड़ लिया, इस दौरान देखने में आया कि अवैध खनन करने वालो के हौसले इतने बुलंद थे कि पुलिस प्रशासन के सामने से ही वह खनन से भरे वाहन लेकर रफू चक्कर हो गए और पुलिस प्रशासन हाथ पर हाथ धरे देखते रह गए।'

गंगोह नगर पालिका सफाई कर्मियों ने चलाया नगर के चारों और नाला सफाई कार्य

अरविन्द चौहान/युरेशिया

गंगोह(सहारनपुर)बरसात का मौसम शुरू होने से पूर्व ही गंगोह नगर पालिका परिषद द्वारा युद्ध स्तर पर नाला सफाई कार्य शुरू कई सफाई टीमें कार्य में जुटी।

गंगोह अधिशासी अधिकारी लोकेंद्र कुमार ने बताया कि आगामी बरसात के मौसम को ध्यान में रखते हुए गंगोह के गांधीनगर मेहंदी नाला, तीतरों रोड, मिर्जा नर्सिंग होम मार्ग,मजार रोड मार्ग, कुरेशियां ईदगाह मार्ग, कुरेशियां दुधाला मार्ग सहित अन्य कई नालो का सफाई कार्य युद्ध स्तर पर प्रारंभ कर दिया गया है।नलों से कचरा निकाल कर अन्य चिन्हित जगहों पर भेजने की व्यवस्था की जा रही है। ईओ ने मीडिया के माध्यम से नगर वासियों को जागरुक करते हुए कहा कि नागरिक कूड़ा कचरा नाली-नालों में ना फेंके उसे सुनिश्चित स्थान पर ही डाले या फिर कचरा गाड़ी में डालें वहीं कुछ लोगों द्वारा सड़कों के आसपास गंदगी का ढेर लगा दिया जाता है। जो गलत है उसे चिन्हित स्थान पर ही डालें नगर आपका है उसे साफ स्वच्छ बनाने में नगर पालिका कर्मचारियों का सहयोग करें।अपने आसपास खाली बेकार पड़े टंरों खाली डिब्बो आदि में बरसात का पानी इकट्ठा न होने दें उस में संक्रमित मच्छर पैदा होने का भंय है।नगरवासीयो अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

डंपर की चपेट में आकर विवाहिता की मौत, पति घायल

मोमीन अली/युरेशिया

नागल। मंगलवार को स्टेट हाईवे पर खटोली मार्ग के निकट खनन से लदे एक ओवरलोड डंपर की चपेट में आकर विवाहिता की मौत हो गई, जबकि पति घायल हो गया। घटना के बाद डंपर चालक मौके से फरार हो गया पुलिस ने विवाहिता के शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम हेतु भेजा है।

टोडरपुर निवासी अक्षय अपनी 26 वर्षीया पत्नी प्रीति का अल्ट्रासाउंड कराने नागल आया था। शाम करीब 4 बजे वह नागल से बाइक पर सवार हो देवबंद के गांव अंबोली स्थित अपनी ससुराल लौट रहा था, जैसे ही उसने खटोली मार्ग स्थित कट से भरतपुर की ओर अपनी बाइक का रुख किया तभी पीछे से तेज गति से आ रहे एक ओवरलोड डंपर ने दंपति की बाइक को अपनी चपेट में ले लिया जिससे अक्षय दूर जा गिरा, जबकि पत्नी प्रीति की ट्रक के पिछले पहिए की चपेट में आकर मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

घटना के बाद डंपर चालक डंपर छोड़ मौके से फरार हो गया। पहुंची पुलिस ने विवाहिता के शव का पंचनामभर पोस्टमार्टम हेतु भेजते हुए डंपर चालक की तलाश शुरू कर दी है। बताया जाता है कि दंपति की फरवरी माह में ही शादी हुई थी।

नहर में नहाने आने वाले युवकों पर रोक लगाने की मांग

शेख़ मौ नादिर /युरेशिया

बेहट। नहर मलकपुर पुल के पास पूर्वी यमुना नहर में नहाने आने वाले युवकों से ग्रामीण परेशान है। नहाने आने वाले युवक गांव की युवतियों व महिलाओ के साथ छेड़छाड़ करते है। ग्रामीणों ने कोतवाली बेहट पुलिस को तहरीर देकर नहर में नहाने आने वालो के खिलाफकार्यवाही किए जाने की मांग की है।

मंगलवार को नहर मलकपुर के ग्रामीण कोतवाली बेहट पहुंचे और पुलिस को तहरीर देकर बताया कि नहर मलकपुर पुल के पास दूर दूर से युवक नहाने आते है जिससे कई बार युवकों की मौत भी हो चुकी है। इसके अलावा आरोप है कि नहर में नहाने आने वाले युवक गांव से कोचिंग या खरीदारी करने आने जाने वाली महिलाओं के साथ भी छेड़छाड़ करते है। ग्रामीणों ने नहर के पास पुलिस पिकेट तैनात किए जाने की मांग की है। शिकायत देने वालो में आलम, जुबैर, फैजान, समीर, शाहनवाज, हम्माद, आमिर, मुजीब, मुफीद, आदिल, जुलकदर, वसीम आदि शामिल रहे।

एक नजर..

पूर्व मंत्री शंखलाल मांझी ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव से की मुलाकात

युरेशिया संवाददाता

अम्बेडकरनगर सामाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व मंत्री शंखलाल मांझी ने नई दिल्ली में सपा प्रमुख अखिलेश यादव से मुलाकात किया लोगो में इसबात की जोरो से चर्चा है लालजी वर्मा सांसद बन जाने पर सीट खाली हो गई है कटेहरी विधानसभा सीट पर उपचुनाव होना तय है। वही सपा सरकार में मंत्री रहे शंखलाल मांझी ने दावेदारी कर दिया है कटेहरी विधानसभा से शंखलाल मांझी विधायक रह चुके हैं शंखलाल मांझी मछुआरा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी जिससे चर्चाओं का दौर शुरू हो चुका है वही जब हमने सपा नेता अंकुर मांझी से बात किया तो उन्होनें बताया राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ सार्थक चर्चा हुई है सपा प्रमुख से मुलाकात से चुनावी हलचल तेज हो गई है

वी ने अपने कंटेंट एग्रीगेटर ऐप वी मुवीज एण्ड टीवी को नए अवतार में लॉन्च किया

युरेशिया संवाददाता

मेरठ। किफायती दामों पर ज्यादा एंटरटेनमेंट की बढ़ती मांग को पूरा करने के प्रयास में जाने-माने दूरसंचार सेवा प्रदाता वी ने अपने कंटेंट एग्रीगेटर ऐप वी मुवीज एण्ड टीवी को इस साल नए अवतार में लॉन्च किया था। मौजूदा टॉप प्लेयर्स जैसे डिजनी प्लस हॉटस्टार के अलावा वी ने आज एक और अग्रणी ओटीटी प्लेयर-जी 5 के साथ नई साझेदारी की घोषणा की है। इस साझेदारी के तहत वी मुवीज एण्ड टीवी ऐप अब मात्र 248 प्रति माह की कीमत पर एक ही सब्सक्रिप्शन में 17 ओटीटी ऐप्स का एक्सेस देता है। वी के यूजर वी मुवीज एण्ड टीवी के लिए सिंगल सब्सक्रिप्शन के साथ अपने मोबाइल एवं टीवी पर टॉप ओटीटी ऐप्स जैसे डिजनी प्लस हॉटस्टार, सोनी लिव, जी5 पर अपने पसंदीदा कंटेंट का लुत्फउठा सकते हैं। इस अवसर पर अवनीश खोसला, चीफमार्केटिंग ऑफिसर, वोडाफोन आइडिया ने कहा, ''वी में हम इस बात को समझते हैं कि भारत में लोग कुछ भी खरीदने से पहले सुविधा और मूल्य को ध्यान में रखते हैं। इसी के मद्देनजर हम ऐसे समाधान लेकर आते हैं जो उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा कर सकें। हमारा कंटेंट एग्रीगेटर प्लेटफॉर्म वी मुवीज एण्ड टीवी ऐप एक ही प्लान के साथ 17 ओटीटी ऐप्स का एक्सेस देता है। इससे न सिर्फएंटरटेनमेंट की लागत कम हो जाती है बल्कि अलग-अलग ओटीटी ऐप्स का सब्सक्रिप्शन लेने के झंझट से भी छुटकारा मिल जाता है।''वी के यूजर मुवीज, शोज और लोकप्रिय टाइटल्स की व्यापक रेंज का आनंद उठा सकते हैं जैसे डिजनी प्लस हॉटस्टार पर विद्या बालन की दो और दो प्यार, वर्तमान में चल रहे आईसीसी मैन्स टी20 वर्ल्ड कप 2024, रीजनल ब्लॉकबस्टर्स जैसे मंजुम्मेल ब्वॉयज, अरनमनाई 4 आदिय सोनी लिव पर यूईएफए यूरो कप, गुल्लक सीजन 4, इंडिया टूर ऑफश्री लंका स्कैम 2003, रॉकेट ब्वॉयज आदि तथा जी5 पर शोज जैसे 'सनफ्लावर', 'ब्रोकन न्यूज', ताज और मुवीज जैसे 'सिर्फएक बंदा काफी है', 'कड़क सिंह', 'वीर सावरकर', 'सैम बहादुर', 'हनुमान'।

जिलाधिकारी ने हस्तिनापुर में बाढ़ राहत कार्यों की तैयारी का किया स्थलीय निरीक्षण

युरेशिया संवाददाता

जिलाधिकारी दीपक मीणा ने खादर क्षेत्र के फ्तेहपुर प्रेम गांव के समीप बाढ़ राहत कार्यों से संबंधित परियोजना के अंतर्गत तटबंध का निरीक्षण किया।उन्होंने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि समय रहते मानक के अनुसार कार्यों को पूरा कर लिया जाए आगे बरसात का समय आ रहा है इसलिए बाढ़ से बचने के लिए पुख्ता प्रबंध होने चाहिए। इस अवसर पर उनके साथ एडीएम एफसूर्यकांत त्रिपाठी,सिंचाई विभाग के एक्सएन प्रमोद कुमार, एसडीओ एनपीएस मथुरिया, और जेई मौजूद रहे।

फ्तेहपुर प्रेम गंगा घाट का निरीक्षण करने के बाद जिलाधिकारी ने हस्तिनापुर में मौजूद प्राचीन बूढ़ी गंगा का निरीक्षण किया। इस अवसर पर नेचुरल साइंसेज ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रियंक भारती से जिलाधिकारी ने बूढ़ी गंगा से संबंधित माव एनजीटी में प्रचलित प्रकरण के संबंध में कई बिंदुओं पर चर्चा की।

उन्होंने हस्तिनापुर में मौजूद सरकारी भूमि का भी निरीक्षण किया और उनकी रिपोर्ट तलब करने के निर्देश दिए, उन्होंने कुछ दिन पूर्व नगर पंचायत द्वारा खाली कराई गई सरकारी भूमि का निरीक्षण किया। इस अवसर पर नगर पंचायत के अधिकारियों को कई विशेष दिशा निर्देश दिए ।

श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल से की शिष्टाचार भेंट

समूह चेयरमैन डा. सुधीर गिरि के आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में डा. राजीव त्यागी ने महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल से भेंट कर उनको पुष्प गुच्छ एवं लार्ड वैंकटेश्वरा की मूर्ति भेंट कर किया अभिनन्दन

युरेशिया संवाददाता

मेरठ।आज का दिन श्री वैंकटेश्वरा समूह के लिए बेहद खास रहा। वैंकटेश्वरा समूह के संस्थापक अध्यक्ष एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. सुधीर गिरि के निर्देश पर श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति एवं समूह चेयरमैन के आधिकारिक प्रतिनिधि शिक्षाविद डा. राजीव त्यागी ने लखनऊ राजभवन में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनंदीबेन पटेल से शिष्टाचार भेंट कर उन्हें श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा, जनस्वास्थ्य एवं महिला सशक्तिकरण को लेकर लगातार विगत पन्द्रह वर्षों से किये गये प्रभावी कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। महामहिम राज्यपाल ने श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे शानदार कार्यों की प्रशंसा करते हुए अपने लिखित शुभकामना संदेश में श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय द्वारा शानदार प्रभावी तरीके से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने एवं भविष्य के लिए स्किल्ड युवाओं की फौज तैयार करने का आवाहन किया है , जो कि विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उत्तर प्रदेश एवं देश का मजबूती से प्रतिनिधित्व कर सकें। आज पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार संस्थापक अध्यक्ष एवं कुलाधिपति डा. सुधीर गिरि के आधिकारिक प्रतिनिधि एवं श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने अपरान्ह एक बजे लखनऊ राजभवन में उत्तर प्रदेश की गवर्नर महामहिम श्रीमती आनंदीबेन पटेल से शिष्टाचार भेंट करते हुए श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय द्वारा 'नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति' को अपने विश्वविद्यालय में शत-प्रतिशत लागू करते हुए उच्च शिक्षा, जन- स्वास्थ्य एवं महिला सशक्तिकरण के लिए किये जा रहे प्रभावी कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अपने लिखित 'शुभकामना संदेश' में महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने कहा कि बहुत ही शानदार रोजगारपरक 'नई शिक्षा नीति' को शत-प्रतिशत लागू करने पर श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय प्रबंधन एवं उसकी पूरी टीम को मेरी शुभकामनाएँ द्य मुझे आशा है कि आप निकट भविष्य में भी 'उत्कृष्ट शिक्षा, मानव स्वास्थ्य एवं महिला सशक्तिकरण' की दिशा में लगातार काम करते हुए भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे। श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी की महामहिम राज्यपाल से उच्च शिक्षा पर शिष्टाचार भेंट एवं महामहिम द्वारा श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के शानदार शैक्षणिक कार्यों के लिए शुभकामना संदेश देने पर डा. राजीव त्यागी को बधाई देने वालों का ताँता लग गया। उनको बधाई देने वालों में श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रधान सलाहकार एवं कुमाऊँ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. वी.पी.एस. अरोड़ा, पंतनगर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के.शुक्ला, सीईओ अजय श्रीवास्तव, समूह सलाहकार आर.एस शर्मा, कुलसचिव डा. पीयूष पांडेय, डा. दिव्या गिरधर, डा. स्नेहलता, डा. मोहित शर्मा, डा. योगेश्वर शर्मा, डा. राजेश सिंह, डा. संजीव भट्ट , डा. नीतू पंवार, डा. राहुल कुमार, डा. आशुतोष सिंह, डा. टी.पी. सिंह, डा. राजवर्धन, डा. दिनेश गौतम, डा. विश्वनाथ झा, मेरठ परिसर निर्देशक डा. प्रताप सिंह, मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

मेरठ के नए एसएसपी बने विपिन टाडा, रोहित सिंह सजवाण को मिली सहारनपुर की जिम्मेदारी

यूपी में आठ IPS के तबादले, विपिन टाडा होंगे मेरठ के नए कप्तान दो साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद एसएसपी मेरठ रहे रोहित सिंह सजवाण बने जिला सहारनपुर के कप्तान

रोहित सिंह सजवाण 25 जून 2022 को ही मेरठ में बरेली से तबादला होकर आए थे, पूरे दो साल बाद 25 जून को ही उनका तबादला किया गया है।

अमीरुद्दीन सैफी/आकाश कुमार /युरेशिया

मेरठ। उत्तर प्रदेश शासन ने बड़ा फेर बदल करते हुए यूपी के आठ IPS अफ्सरों का तबादला कर दिया। जिसमें जनपद मेरठ में दो साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद 2013 बैच के आइपीएस अधिकारी एसएसपी मेरठ रहे रोहित सिंह सजवाण को जनपद सहारनपुर के कप्तान की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं उनकी जगह सहारनपुर से ट्रांसफर होकर आए 2012 बैच के आईपीएस अधिकारी विपिन टाडा अब मेरठ के नए कप्तान बनाए गए हैं। आईपीएस अधिकारी विपिन टाडा मूल रूप से जोधपुर के राजस्थान के रहने वाले हैं। विपिन टाडा ने एमबीबीएस की पढ़ाई की है। पिता मच्छी राम पेशे से वकील हैं। इसके अलावा वह मुंबई के पूर्व पुलिस कमिश्नर और पूर्व मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री सतपाल सिंह के दामाद हैं। वहीं मेरठ के कप्तान रोहित सिंह सजवाण को अब सहारनपुर भेजा गया है। वो सहारनपुर के नए कप्तान होंगे। बता दें कि रोहित सिंह सजवाण 25 जून 2022 को ही मेरठ में बरेली से तबादला होकर आए थे। पूरे दो साल बाद आज उनका तबादला हो गया है। रोहित सिंह सजवाण ने मेरठ में दो साल का कार्यकाल पूरा किया है। भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर में वैज्ञानिक रहे हैं। रोहित सिंह सजवाण मूलरूप से उत?तराखंड के नई टिहरी जिले के चाका किराड़ा के निवासी हैं। उनके पिता नई टिहरी जिले के ही उच्च प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक हैं। एसएसपी के तौर पर मेरठ उनका चौथा रहा मेरठ से पूर्व उनकी तैनाती बरेली में थी। रोहित सिंह सजवाण के पिता राजेंद्र सिंह सजवाण उत्तराखंड के नई टिहरी जिले में उच्च प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक हैं। रोहित सिंह तीन भाइयों में सबसे बड़े हैं। उनकी स्कूली शिक्षा नैनीताल के सरस्वती विहार स्कूल में हुई। वर्ष 2009 में उन?होंने इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन से बीटेक किया। इसके बाद उनका चयन भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर में हुआ था। वहां वह ग्रुप ए विज्ञानी रहे। बाद में पुलिस सेवा में आ गए। गौरतलब है कि हाल ही में उत्तराखंड के बसुंगा की रहने वाली एमडी डाक्टर अदिति से उनका विवाह हुआ। बतौर कप्तान उनकी पहली तैनाती महाराजगंज में हुई थी। वहां से वे बरेली गए। बतौर एसएसपी मेरठ उनका तीसरा जिला था। वे गोरखपुर, लखनऊ और मुरादाबाद में एसपी रह चुके हैं।

पूर्व विधायक योगेश वर्मा ने फेसबुक पर लाइव आकर निकाली चुनाव हारने की भड़ास

किसी का नाम लिए बगैर बोले योगेश वर्मा

पिछले चुनाव में वो सवा लाख वोट ही ले पाए और तीसरे नंबर पर आ गए जबकि मेरी पत्नी को लोकसभा में लगभग 5,36,000 वोट मिले हैं

सपा की अंदरूनी गुटबाजी आई सामने बिना नाम लिए ही सपा के एक मौजूदा विधायक पर साधा

निशान बोले योगेश जो उनके विपक्षी हैं वह चुनाव लड़ते तो अपना हाल देख लेते जल्द निकालेंगे धन्यवाद यात्रा

युरेशिया संवाददाता

मेरठ। लोकसभा चुनाव 2024 खत्म हो चुका जिसमें कि मेरठ-हापुड़ लोकसभा सीट पर एनडीए गठबंधन से भाजपा प्रत्याशी अरुण गोविल ने जीत हासिल की है। लेकिन चुनाव में हार जीत पर अभी भी मंथन जारी है, पश्चिम उत्तर प्रदेश के बीजेपी के दो बड़े नेता संगीत सोम और संजीव बालियान आमने-सामने आ गए हैं। तो वहीं इस चुनाव में हारने के बाद जिला मेरठ में सपा की अंदरूनी गुटबाजी भी निकाल कर सामने आ गई है। इंडिया गठबंधन से समाजवादी पार्टी की मेरठ- हापुड़ लोकसभा प्रत्याशी रहीं पूर्व महापौर सुनीता वर्मा के पति योगेश वर्मा फेसबुक लाइव पर आए और उन्होंने किसी का नाम लिए बिना अपनी भड़ास निकाली हालांकि उनका इशारा समाजवादी पार्टी के एक मौजूदा विधायक की तरफ जरूर था लेकिन उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया। फेसबुक पर लाइव आने के बाद पूर्व विधायक योगेश वर्मा ने सपा के एक मौजूदा विधायक पर निशाना साधते हुए कहा कि पिछले चुनाव में वो सवा ख वोट ही ले पाए और तीसरे नंबर पर आ गए जबकि मेरी पत्नी को लोकसभा में लगभग 5,36,000 वोट मिले हैं। योगेश वर्मा ने आगे कहा कि मैं लोगों की दिलों पर राज करता हूं उन्होंने यह भी कहा कि जो उनके विरोधी हैं, अगर वह चुनाव लड़ते तो अपना हाल देख लेते। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के लिए मैं अपनी जान भी दे सकता हूं, उन्होंने कहा कि वह जल्द ही धन्यवाद यात्रा निकालेंगे क्योंकि लोकसभा की पांच विधानसभाओं में से चार विधानसभाओं पर उनको जीत हासिल हुई है, उन्होंने कहा कि कैंट से लीड ज्यादा थी और वहां फर्जी वोट डाली गई है जिसकी वह जांच कराएंगे। हालांकि योगेश वर्मा ने पूरे फेसबुक लाइव में अपना पक्ष रखने के दौरान सपा के किसी नेता का नाम नहीं लिया लेकिन अपने विरोधियों को उन्होंने चेतावनी और चुनौती तक दे डाली। योगेश वर्मा ने कहा कि वह अपने समाज और मुस्लिम मतदाताओं का धन्यवाद करते हैं साथ ही वह जल्द ही अपने समाज को समाजवादी पार्टी से और जोड़ने का भी काम करेंगे।

डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स एवम् निपुण भारत मिशन की संयुक्त बैठक का आयोजन

आज दिनांक 25.06.2024 को जून माह की डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स एवम् निपुण भारत मिशन की संयुक्त बैठक का आयोजन विकास भवन में मुख्य विकास अधिकारी महोदया की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें जनपद स्तरीय अधिकारीगण एवं खंड शिक्षा अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। मुख्य विकास अधिकारी महोदया द्वारा कायाकल्प के समस्त पैरामीटर जिनमे कार्य पूर्ण नहीं है, उनको पूरा करने हेतु निर्देशित किया। साथ ही विद्यालय पुनः खुलने के पश्चात ऑनलाइन रजिस्टर पर छात्र उपस्थिति एवम् एमडीएम में बच्चो की उपस्थिति दर्ज करने के लिए कहा गया। निपुण भारत मिशन के अंतर्गत क्लासरूम रूपांतरण हेतु किए जा रहे समस्त कार्य जैसे संदर्शिका का प्रयोग, शिक्षण योजना, शिक्षण सामग्री का प्रयोग, प्रिंट रिच सामग्री, बच्चो की कक्षा में प्रतिभागिता, गृह कार्य, कार्यपुस्तिका का प्रयोग एवम् निपुण तालिका पर विशेष ध्यान देने हेतु निर्देशित किया गया। मुख्य विकास अधिकारी महोदया द्वारा अक्टूबर 24 में होने जा रहे प्रथम चरण में छात्र छात्राओं के निपुण आंकलन हेतु खंड शिक्षा अधिकारियों एवम् मेंटर कैडर को निर्देशित किया गया कि सभी विद्यालय में उपस्थित बढ़ाने एवम् शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए।

साथ ही, सभी विकास क्षेत्रों को जल्दी ही डीबीटी पेंडेंसी कम करने के निर्देश दिए गए। बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदया द्वारा समस्त कार्यों को निर्धारित समयावधि में पूर्ण कराने हेतु निर्देशित किया गया।

कल्याण एवॅ पुनर्वास कार्यालय के मीटिंग हाल में आयोजित की जायेगी जिला सैनिक बन्धु की मासिक बैठक

युरेशिया संवाददाता

मेरठ जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने बताया कि पूर्व सैनिकों एवं शहीद व दिवंगत सैनिकों की पत्नियों तथा उनके आश्रितों की समस्याओं के निराकरण हेतु जिला सैनिक बन्धु की जून 2024 की मासिक बैठक जिलाधिकारी, महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 27 जून 2024 को (दिन गुरूवार दोपहर-12.00 बजे) जिला सैनिक कल्याण एवॅ पुनर्वास कार्यालय मेरठ के मींटिग हाल में आयोजित की जायेगी ।

उन्होने जिला सैनिक परिषद कार्यकारिणी मेरठ व जिला सैनिक बन्धु मेरठ के पदेन व गैर सरकारी सदस्यों से उक्त बैठक में भाग लेने का अनुरोध किया है। उन्होने जनपद मेरठ के पूर्व सैनिकोंध्शहीद व दिवंगत सैनिकों की पत्नियों तथा उनके आश्रितों को सूचित करते हुये बताया कि अपनी समस्याओं के निराकरण हेतु दिनांक-26-06-2024 तक अपना प्रार्थना-पत्र कार्यालय की मेल पर या कार्यालय में हस्तगत करा दे। जिन भूतपूर्व सैनिको की प्रशासन से जमीन व पुलिस सम्बन्धित समस्यायें है वे बैठक में आने की कृपा करें। दिनांक 27-06-2024 को कार्यालय में पब्लिक डिलिंग नही की जायेगी,केवल बैठक से सम्बन्धित प्रार्थना-पत्र पर ही विचार किया जायेगा। मेल आई डी zsame-up@nic.in है।

रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण अन्तर्गत राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं को 03 माह तक आत्मरक्षा प्रशिक्षण दिये जाने हेतु प्रशिक्षित ट्रेनर्स 15 जुलाई तक कार्यालय जिला विद्यालय निरीक्षक में जमा कराये आवेदन-जिला विद्यालय निरीक्षक

युरेशिया संवाददाता

मेरठ। जिला विद्यालय निरीक्षक राजेश कुमार ने बताया कि राज्य परियोजना निदेशक, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा अभियान, 18 पार्क रोड, लखनऊ के पत्रांक के अनुक्रम में रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण के अन्तर्गत, जनपद मेरठ के 46 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं को 03 माह तक आत्मरक्षा प्रशिक्षण दिया जाना प्रस्तावित है। जिस हेतु मार्शल आर्ट यथा-जूडो, ताईक्वाडो, कराटे आदि प्रशिक्षित ट्रेनर्स (ब्लैक बेल्ट योग्यताधारी) का चयन किया जाना है। इस हेतु आवेदन प्रारूप जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय मेरठ या निकटवर्ती राजकीय हाईस्कूल/इण्टर कॉलिज से निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है। प्रशिक्षित ट्रेनर्स हेतु आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2024 साथ 05:00 बजे तक निर्धारित है।

प्रशिक्षक के चयन हेतु विशेष बिन्दु निम्नवत् है-जनपद मेरठ के 46 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में 'रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण के अन्तर्गत बालिकाओं को 03 माह तक आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्रदान किये जाने हेतु प्रशिक्षकों के चयन हेतु आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2024 की सांय 05:00 बजे तक आमंत्रित किये जाते है, प्रशिक्षक द्वारा अपना आवेदन निर्धारित तिथि तक पंजीकृत डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से जिला विद्यालय निरीक्षक, कार्यालय, खूनी पुल, मेरठ में जमा किया जा सकता है, प्रत्येक राजकीय माध्यमिक विद्यालय में प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किये जाने के उपरान्त सम्बन्धित प्रधानाचार्य द्वारा प्रति माह रू0 5,000/- की दर से प्रशिक्षक को मानदेय प्रदान किया जायेगा तथा प्रशिक्षक को तीन माह हेतु अधितकम मानदेय रु0 15,000/- दिया जायेगा।

एक प्रशिक्षक द्वारा अधिकतम तीन विद्यालयों में उपस्थित होकर प्रशिक्षण कराया जा सकता है, उक्त प्रशिक्षण प्रत्येक राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में 03 माह हेतु निर्धारित है, प्रशिक्षण की अवधि प्रतिदिन 40 मिनट निर्धारित है, प्रशिक्षण हेतु ऐसे प्रशिक्षकों का चयन किया जायेगा जिसके पास मार्शल आर्ट यथा-जूडो, ताईक्वाडो, कराटे आदि में ब्लैक बेल्ट योग्यता प्रमाण-पत्र हो, चयनित प्रशिक्षण ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में भी कार्य करने का इच्छुक हो, प्रशिक्षक के रूप में यथा सम्भव महिला प्रशिक्षक का ही चयन किया जायेगा। महिला प्रशिक्षक न मिलने की स्थिति में पुरुष प्रशिक्षक चयनित किया जायेगा, जिन राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में महिला शिक्षिका कार्यरत नहीं है उनमें महिला प्रशिक्षक को भेजा जायेगा, मार्शल आर्ट यथा-जूडो, ताईक्वाडो, कराटे आदि में ब्लैक बेल्ट योग्यताधारी प्रशिक्षित ट्रेनर्स के चयन हेतु आवेदन पत्र का प्रारूप जिला विद्यालय निरीक्षक, मेरठ या निकटवर्ती राजकीय हाईस्कूलध्इण्टर कॉलिज से निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है। प्रशिक्षित ट्रेनर्स द्वारा कार्यालय जिला विद्यालय निरीक्षक, खूनी पुल, मेरठ में आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2024 की सांय 05:00 बजे तक निर्धारित है। निर्धारित तिथि के उपरान्त कोई आवेदन किसी भी माध्यम से स्वीकार नहीं किया जायेगा।

मालिक, मुद्रक व प्रकाशक विकास दीप त्यागी ने युरेशिया प्रिन्टिग प्रेस, 270, फूलबाग कालोनी, सूरज कुण्ड रोड, मेरठ (उ0प्र0) से छपवाकर 270, फूलबाग कालोनी, सूरज कुण्ड रोड, मेरठ (उ0प्र0) से प्रकाशित किया।

सम्पादकः संजय त्यागी मो0 : 9412835535, 9410231400 फोनः 01214324497 Email- editorureshiya@gmail.com (किसी भी विवाद के लिए मेरठ न्यायालय मान्य)